ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 19 | जनवरी-I | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.00

नर से नरोत्तम प्रजापिता ब्रह्मा

18 जनवरी 'विश्व शांति दिवस'

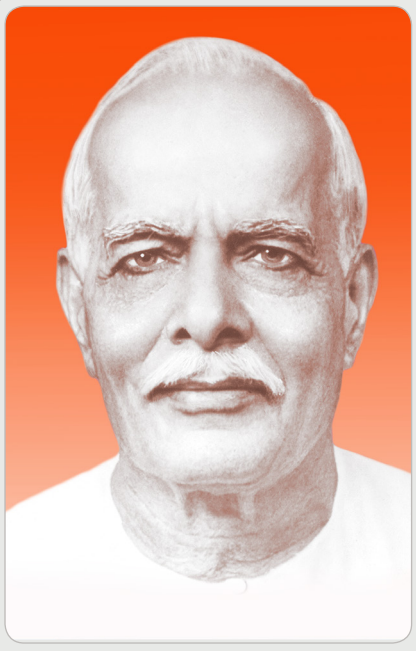

रोज़ गिरकर भी मुकम्मल खड़े हैं, ऐ ज़िन्दगी देख, मेरे हौसले तुझसे भी बड़े हैं..।

बहुत मुश्किल है खड़े होकर खड़े रहना, उससे भी ज़्यादा मुश्किल है बड़े होकर बड़े रहना..।

इन दोनों कहावतों को अगर किसी ने अपने वजूद से सहज बनाया है, तो वो हैं हमारे ब्रह्मा बाबा। उन्होंने परमात्मा की हर बात को सम्पूर्ण रीति से सबके साथ मिलकर अपने जीवन तथा दूसरों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने का जो एक अकल्पनीय कार्य किया, उसे आज आध्यात्मिक संसार सहजता से स्वीकार करता है। आज इस संस्था का प्रारूप ब्रह्मा बाबा के अस्तित्व पर ही बना हुआ है। वर्तमान परिवेश में अगर कोई हमारे लिए एक ज्वलंत स्वरूप में स्थापित है, तो वो हैं हमारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा।

एक सांसारिक मनुष्य, जो हीरे-जवाहरातों का व्यापारी था, ने अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति एक ट्रस्ट बनाकर कुछ माताओं और बहनों को उसका ट्रस्टी बनाकर मानव सेवा हेतु सौंप दिया, ऐसी दिव्य विभूति का नाम दादा लेखराज था। सूट-बूट पहनकर दुनिया में अपनी एक अलग छाप छोड़ने वाला इंसान एक साधारण धोती-कुर्ता पहनने वाला बन गया। जिनका मन कभी हीरों से खेलने का करता था, धन कमाने में रम था, वही हीरे-मोती उन्हें कौड़ी जैसे लगने लगे। कल जो इधर-उधर मंदिरों में, तीर्थों पर जाकर दर्शन करने के लिए लालायित थे, आज वे स्वयं परमात्मा के रथ बने, यह एक अद्भुत परिवर्तन था। उनके मुखारविंद का परमात्मा स्वयं प्रयोग कर उससे आध्यात्मिक ज्ञान प्रस्फुटित करते। यह सबकुछ आपको अकल्पनीय सा लगेगा, लेकिन यह सब हुआ है। आश्चर्य तो यह माना जाता है कि जिनके अंदर ये सारे परिवर्तन हुए, वह स्वयं इन समस्त बातों को लेकर अनभिज्ञ थे। उनके अंदर यह आमूलचूल परिवर्तन देखकर एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं, करीब चार से पाँच सौ माताएं, बहनें और भाई उस दिव्य विभूति के रंग में रंगने को आतुर हो गये। इतना सुंदर संगठन, जिसमें प्रभु लीला का रस सबके अंदर समा गया, इस संगठन को नाम मिला 'ओम मंडली'। छोटी सी घटना हम आपको याद दिलाना चाहेंगे, कि 1936-37 में एक प्रख्यात व्यापारी दादा लेखराज कृपलानी के 60 वर्षीय तन में परमात्मा ने परकाया प्रवेश करके दिव्य अवतरण लिया, और यह अवतरण इतना अनोखा था कि किसी को पता भी नहीं चला और चमत्कार होने शुरू हुए। तभी से ओम मंडली संगठन के सभी भाई बहनों, माताओं ने स्वयं के संस्कारों का दिव्यीकरण करने का लक्ष्य लिया। ये दादा लेखराज

- शेष पेज 7 पर...

मन स्वच्छ करो, तो दुनिया में नम्बर वन आओगे : शिवानी

इंदौर-म.प्र.। इंदौर स्वच्छता में देश के 200 शहरों में नम्बर वन रहा है। 2018 में 4000 से भी अधिक शहरों से प्रतियोगिता है, लेकिन विश्व में नम्बर वन आना है तो मन को स्वच्छ करना होगा। मन स्वच्छ हो गया तो बाहर और अन्दर की पूरी गंदगी साफ हो जाएगी।

यह विचार ब्रह्माकुमारीज़ की जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु.शिवानी ने रेस कोर्स रोड स्थित बास्केटबॉल कॉम्पलेक्स में 'जीवन रूपी खेल के सुनहरे नियम' विषय पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यहाँ के लोगों ने वो कर दिखाया है जो अब तक किसी ने नहीं किया। संगठन में इतनी शक्ति होती है कि एक बार संकल्प ले लिया जाए तो कुछ भी किया जा सकता है। शहर स्वच्छ होने के बाद अब सोच, बोल और कर्म को साफ करने की ज़रूरत है, तभी शांत और सुखी शहर का निर्माण होगा।

उन्होंने कहा कि हमारे विचार शरीर के प्रत्येक सेल तक जाते हैं। एक बार गलत रिकॉर्डिंग हो गई, तो समझो वो म्यूज़िक की तरह बार-बार बजते हैं। यही बीमारी का कारण है। डॉक्टर शरीर के अंग की सर्जरी कर बीमारी खत्म कर देता है, लेकिन दिमाग में बात रेकॉर्ड रहने से बीमारी वापस आ जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि गलत विचारों से भरी इस रिकॉर्डिंग को मेडिटेशन करके खत्म कर दिया जाए।

सकारात्मक आभामंडल से बनते हैं रिश्ते : ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि रिश्ते बनाने के लिए बोल और व्यवहार ज़रूरी नहीं है, ज़रूरी है विचारों का सकारात्मक होना। सकारात्मक ऊर्जा रिश्तों को खींचती है। उन्हें संजोकर रखती है। लेकिन जीवन में नेगेटिव विचार होंगे तो इंसान का आभामंडल कम. जोर होता है और रिश्ते बिगड़ जाते हैं। लोगों के मन की नेगेटिव स्थिति ही दुनिया के आभामंडल को खराब करने के लिए ज़िम्मेदार है।

कलियुगी बातों को सतयुगी तरीके से करें तो दुनिया बदल जाएगी : कलियुग में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार प्रत्येक व्यक्ति पर हावी है। यदि सब में सतयुगी विचारधारा आ जाए और वातावरण पॉज़ीटिव हो जाए तो कलियुग में भी सतयुग लाया जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कलियुग को साफ करना, मन को सतयुगी बनाना। इसके लिए प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक प्रत्येक कर्म को करने से पहले एक बार सोचना ज़रूरी है कि यह अच्छा है या बुरा। ब्र.कु. शिवानी बहन ने टी.वी. पर आने वाले पॉज़ीटिव व नेगेटिव कार्यक्रमों की तुलना करते हुए कहा कि सुबह के आधे घंटे का आध्यात्मिक कार्यक्रम लोगों के जीवन में खुशहाली ला सकता है। लोग दिनभर टी.वी. पर फिल्म व सीरियल देखते हैं। तो उनके जीवन में कितनी नेगेटिविटी आती होगी। इसी प्रकार दिनभर सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से आने वाली नेगेटिव इनफॉर्मेशन के कारण लोगों की सोच कलियुगी हो गई है। यदि स्व-परिवर्तन हो जाए तो विश्व परिवर्तन निश्चित है।

सब सात्विक होना ज़रूरी: ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि जो खाते हैं, पढ़ते हैं और देखते हैं वह सात्विक होना ज़रूरी है। भोजन किस धन से खरीदा गया है यह ध्यान रखना ज़रूरी है। यदि वह भ्रष्टाचार और बेईमानी की कमाई से खरीदा गया है तो ऐसे भोजन से सोच खराब होती है। खाना पकाते समय भी मन में अच्छे विचार रखना चाहिए। इसी पर एक कहावत भी है कि जिस घर में प्यार से खाना पकता है, वहाँ रिश्ते हमेशा सलामत रहते हैं। पढ़ने और देखने में भी हमें ऐसी सामग्री का उपयोग करना चाहिए जो आध्यात्मिक और सात्विक हो। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु.कमला बहन, मुख्य क्षेत्रिय समन्वयक ब्र.कु.हेमलता, संभागायुक्त संजय दूबे सहित विश्व विद्यालय के सदस्य व बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे। संचालन छ.ग. से आईं ब्र.कु. मंजू ने किया।

दीप प्रज्वलित करते हुए संभागायुक्त संजय दूबे, इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष शंकर लालवाणी, ब्र.कु. कमला दीदी, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. हेमलता सहित शहर के गणमान्य लोग।

उनके कदम यहाँ... निगाहें वहाँ...

जैसे-जैसे जनवरी मास का आगाज़ होता है, तो कइयों के मानस पटल पर उस त्याग और तपस्वीमूर्त की छवि फिल्म के रील की तरह घूमने लगती है। वो महान पुरुष जिन्होंने अपने जीवन से वो कर दिखाया, जिसकी वजह से वे समस्त मानव जाति के लिए उत्कृष्ट व सुकून भरी ज़िन्दगी के राहगीर बन गए। अथवा यूँ कहें तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी, कि सारी मानव जाति के लिए वे ऐसा उदाहरण बने जिनके त्यागमय जीवन की नींव बहुत गहरी व हरेक के दिल पर छाप छोड़ने वाली रही। उनके जीवन के कई स्नेह संस्मरण व खुशियों भरी स्मृतियाँ, वो पवित्र पालना की झलकियाँ मानस पटल पर आये बिना नहीं रहतीं। हाँ, हम ऐसी महान विभूति प्रजापिता ब्रह्मा, जो कि ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक रहे, उनकी बात कर रहे हैं। वे सारे मानव मात्र के साथ हृदय से जुड़ गये। उनके हृदय की विशालता हर बाधाएँ, परिस्थितियाँ, जाति, रंग, देश-प्रदेश से तिरोहित करती हुई हरेक के दिल को छूने वाली रही। ये सारी चीज़ें जैसे उनके व्यक्तित्व के सामने बौनी सी रह गईं।

- ब्र.कु. गंगाधर

सोचने की बात ये है कि ऐसी असाधारण विभूति ने अपने जीवन को जीने के मापदण्ड को किस प्रकार नियमों की परिधि में बांधा होगा, ये कल्पना से भी परे है। फिर भी यहाँ जो हमने समझा वो आपके सामने रख रहे हैं...।

प्रजापिता ब्रह्मा ने एक संकल्प लिया कि इस सारे विश्व से दु:ख, अशांति का नामोनिशान मिट जाये। साथ-साथ समझा कि उसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी व त्याग पहले स्वयं मुझे करना होगा। कहते हैं परमात्मा को जब सृष्टि रचने का ख्याल आया, तो उन्होंने इस शुभ कार्य के लिए प्रजापिता ब्रह्मा को ही चुना। उन्हें ही श्रेष्ठ व सुंदर दुनिया बनाने का जिम्मा दिया। बस उसी क्षण प्रजापिता ब्रह्मा ने देह सहित हर समय, श्वास, संकल्प को प्रभु अमानत समझ इस कार्य में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। उन्होंने स्वयं को सिर्फ ट्रस्टी समझा। ट्रस्टी माना ही मेरा कुछ भी नहीं। ये अमानत है, और इस अमानत में खयानत ना पड़े, इस बात का मुझे ख्याल रखना, ये चरितार्थ करके बताया ब्रह्मा बाबा ने। ज़रा सोचिये, शरीर में रहते हुए इसके भान से परे रहना कितना कठिन है, लेकिन उनके जीवन से सदा हमने देखा कि वे वैसे ही थे। बिल्कुल ट्रस्टी की तरह अपने शरीर में रहे और अपना सर्वस्व विश्व कल्याण में लगाया।

शरीर में रहते ट्रस्टी बनना माना शरीर के भान से ऊपर उठकर रहना। मानो हम विचार करें कि शरीर की सारी कर्मेन्द्रियाँ जो कि अपने तरफ आकर्षित करती हैं, उससे भी परे रहना। जैसे आँख, कहते हैं आँख ऐसी कर्मेन्द्री है शरीर की, जिससे जीवन की 80 प्रतिशत ऊर्जा खर्च होती है। आँखें धोखा भी दे सकतीं और आँखें दूसरों को राहत भी दे सकती हैं। जैसे कोई सन्यासी सन्यास करके घर से बाहर चला जाता है। यदि वो वापस आ जाये तो उसको क्या कहेंगे? सन्यासी तो नहीं कहेंगे ना! बाबा ने एक बार विश्व कल्याणार्थ अपना सम्पूर्ण समर्पित कर दिया, तो फिर पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। इस त्याग की नींव ने ही उन्हें समस्त मानव जाति का हृदय सम्राट बना दिया। बाबा ने सुबह उठने से रात को सोने तक मनुष्य का जीवन कैसा हो, और कैसे परफेक्ट हो, वो ना सिर्फ बताया बल्कि करके दिखाया। जैसे कि खाना खायें तो कैसे! बाबा हमेशा परमात्मा की याद में और शांति से भोजन करते थे, बीच में बात नहीं करते थे। वे चलते थे, तो भी बड़ी शालीनता से। वे किसी से बात भी करते, तो हद से ऊपर उठकर। उनकी भावना सबके प्रति इतनी उच्च और शुभ थी, कि जो भी उनके सानिध्य में आता, वो

- शेष पेज 4 पर...

ड्रामा की नॉलेज व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर देती है

ड्रामा में हर सीन न्यारी है, सेम नहीं है, इसलिए ड्रामा की नॉलेज ने व्यर्थ चिंतन, परचिंतन से फ्री कर दिया है। यह क्यों हुआ? क्या हुआ? ड्रामा। मैंने देखा है सवेरे से रात्रि तक कराने वाले को जो कराना है, करा ही रहा है, वो बहुत होशियार है। कराने वाला करा रहा है, यह मैं सिर्फ शब्द नहीं कहती हूँ परन्तु बड़ा वन्डर लगता है। कैसे करा रहा है! हम करने वाले अचल अडोल रूहानी तख्त पर साक्षी हो करके प्ले कर रहे हैं। ऐसे नहीं सिर्फ बैठ जाते हैं, पार्ट प्ले कर रहे हैं आर्ट के रूप में। ड्रामा की नॉलेज से बाबा को साथी बनाया है, ड्रामा की नॉलेज से अचल अडोल रहने का नैचुरल नेचर बन जाता है, तो कोई भी बात हो वो बड़ी नहीं लगती है। साक्षी होकर देखें तो बहुत अच्छा है। हमारी यह गॉडली स्टूडेंट लाइफ बहुत अच्छी है। मैं भी सौ साल से ऊपर की हो गई हूँ, अब भी स्टूडेंट लाइफ है, माना सारी लाइफ ही स्टडी में सफल हो रही है। मैं कभी टायर्ड नहीं हुई तो रिटायर्ड क्यों होंगी! सेवाधारी के हिसाब से पहले त्यागी फिर तपस्वी फिर सेवाधारी यह तीनों ही साथ-साथ हो। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हासिल। याद से याद मिलती है, क्योंकि सच्ची दिल की याद में कोई फरियाद नहीं होती है। यह याद समय अनुसार दुश्मन को भी मित्र बनाने वाली है। सारे संसार में हमारा कोई दुश्मन नहीं है। सभी मित्र हैं। तो हरेक दिल से पूछे मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! जब मैं आत्मा हूँ तो देह से न्यारा हूँ। तो बाबा कहता है हे आत्मा! तुम मेरी सन्तान हो, परंतु बचपन के दिन भुला न देना। हरेक को बहन भाई की दृष्टि से देखो, यह बहन भाई का सम्बन्ध भी संगमयुग पर कितना फायदे वाला है। एक दो को देख कितनी खुशी होती है। तो हम सबकी स्टूडेंट लाइफ है, भले कोई की उम्र साठ से ऊपर हो या कोई उम्र में छोटा हो, पर वो भी स्टूडेंट, वो भी स्टूडेंट। साक्षी होकर देखते हैं, हमारा आपस में स्टूडेंट लाइफ में सम्बन्ध बहुत अच्छा है। बैठके आपस में रूहरूहान करते हैं। रूहरूहान में ज्ञान की गहराई में जाते हैं। जितना गहराई में जाते हैं तो लगता है बाबा को ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगती है। यह देह के सम्बन्ध से न्यारा बनाने वाली नॉलेज है। तो संगमयुग पर कोई-कोई बातें इतनी अच्छी लगती हैं जो जीवन यात्रा में कदम-कदम पर कमाई करा रही हैं। समय की पहचान माना स्वयं की पहचान। अभिमान नहीं है, देही-अभिमानी की स्थिति से सहजयोगी हैं।

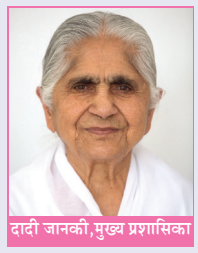
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

ब्रह्माबाबा के देह नहीं, गुणों से संबंध

ब्रह्माबाबा के हर कर्त्तव्य से हमारा प्यार है। हम बाबा का चित्र इसीलिए रखते हैं क्योंकि इस चित्र द्वारा ही विचित्र हमको मिला। ब्रह्माबाबा का कभी भी हम चित्र देखते हैं तो हमारा अटेंशन ब्रह्माबाबा के तन में नहीं जाता, लेकिन ये किसका माध्यम है – उस तरफ हमारी बुद्धि जाती है। कोई दूसरे लोगों के मुआफिक मूर्ति पूजा के रीति से हम ब्रह्माबाबा का चित्र नहीं रखते हैं। लेकिन ब्रह्माबाबा का चित्र बाबा के कमरे में इसीलिए रखते हैं कि हमको इस तन द्वारा शिवबाबा की नॉलेज मिली है तो उसकी स्मृति आती है। शिवबाबा ने हमको क्या से क्या बना दिया! तो चित्र हम नहीं देखते लेकिन चित्र द्वारा विचित्र को देखते हैं। बाबा के चित्र के सामने भी कोई क्वेश्चन वा समस्या ले करके जाता है तो उसे उसका उत्तर मिलता है। तो ब्रह्माबाबा के माध्यम द्वारा शिवबाबा आपको उत्तर देता है और अनुभव होता है जैसे सचमुच बाबा हमारे से बोल रहा है। क्योंकि हमारी भावना ही वह है कि शिवबाबा हमसे ब्रह्मा बाबा द्वारा मिल रहा है। तो बाबा हमको भावना का फल ब्रह्माबाबा द्वारा देता है। माध्यम को जानना तो पड़ेगा ना। इसीलिए हमारा ब्रह्मा बाबा से भी इतना ही प्यार है और शिवबाबा से भी इतना ही प्यार है। ब्रह्मा की आत्मा से हमारा कई जन्मों का कनेक्शन है। स्वर्ग में राज्य भी ब्रह्माबाबा के साथ करेंगे। तो आदि आत्मा होने के नाते से और जगतपिता होने के नाते से, साकार ब्रह्मा साकार सृष्टि का पिता है और इस आत्मा के साथ हमारे कई जन्मों का कनेक्शन है, उस नॉलेज से हम ब्रह्माबाबा को देखते हैं। बाकी शरीर की रीति से सोल कॉन्शियस हुए बिना बाबा के कमरे में आप बैठो तो आपको कुछ भी अनुभव नहीं होगा। जब हम अपनी ही बॉडी को भूलने की कोशिश करते हैं तो ब्रह्मा बाबा की बॉडी को क्यों देखें! तो हमारा देह के साथ नहीं, लेकिन ब्रह्माबाबा के कर्त्तव्य, विशेषता, गुण, शक्तियों के साथ सम्बन्ध हैं, इसीलिए हमको अनुभव होता है। कोई कमज़ोरी होगी तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे लाइट माइट की किरणों से बाबा हमको शक्ति दे रहा है व हमारी कमज़ोरी मिटती जा रही है। साथ ही यह भी अनुभव होता है कि अव्यक्त रूप में ब्रह्माबाबा बहुत पालना दे रहे हैं। ऐसा अनुभव करा रहे हैं जैसे साकार में पालना दे रहे हैं। तो इस अनुभव को बढ़ाओ और मुरली को मनन करो। कई कहते हैं हमको मनन करने का टाइम ही नहीं मिलता। लेकिन कई काम ऐसे होते हैं, जैसे आप नहा रहे हो, कपड़े धुलाई कर रहे हो, खाना बना रहे हो, तो उस समय उसमें फुल बुद्धि लगाने की तो बात ही नहीं है। ऐसे ऐसे टाइम पर आप मनन कर सकते हो। हाँ कोई कोई का काम होता है फुल दिमाग लगाने का, तो वह भी कितना, 8 घण्टा। 8 घण्टा जॉब करो, 8 घण्टा आराम करो, फिर जो समय बचता है उसमें सेवाकेन्द्र की सेवा करो, ज्ञान-योग सिखलाओ। उसमें भी आपकी कमाई है।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

ईगो की समाप्ति के लिए विशेषता देखें...

श्रेष्ठ कर्म के लिए सबसे पहले चाहिए दैवी गुणों की धारणा। दैवी गुणों की धारणा में कमी आने का मूल कारण है ईगो(अहंकार)। अनुभव कहता है, ज्ञान बहुत सुन लो, योग बहुत अच्छा लगाओ, बाबा को प्यार करो, परन्तु अगर अन्दर में ईगो है, तो वह सब बातों को ढ़क देगा, नुकसान कर देगा। सबसे पहले हमने देखा कि पिताश्री, जिनके पास इतनी अथॉरिटी थी, इतना हम बच्चों के लिए मेहनत करते समझाते लेकिन हमने कभी उनके व्यवहार में ईगो नहीं देखा। ईगो अभिमान पैदा करता, ईर्ष्या पैदा करता, क्योंकि देह अभिमान से ईगो आता है। हमें कभी ईगो न आये, इसकी अनेक युक्तियाँ बाबा ने बताई हैं। पहले तो हमारी बुद्धि में रहता कि इस ज्ञान की पढ़ाई में मैं सदैव स्टूडेन्ट हूँ। दूसरे सब समझते हम सब स्टूडेन्ट पढ़ाई पढ़ रहे हैं। मैं होशियार हूँ यह मैं कभी नहीं सोचती। मेरे से बहुत होशियार हैं। जितना जो होशियार है, मुझे उनसे सीखना है। हर एक, कोई किसमें कोई किसमें होशियार है, मुझे हर एक से स्टूडेन्ट बन गुण ग्रहण करने हैं, स्टडी करनी है, इतना होशियार होना है, चाहे कोई छोटा काम करता, चाहे कोई बड़ा करता है। चाहे कोई भाषण करता, चाहे कोई कर्मणा सेवा करता, लेकिन वह कितना उस बात में परफेक्ट है, मुझे उसकी परफेक्शन अपने में लानी है। जब मैं बुद्धि में रखती कि हर बात में मुझे परफेक्ट होना है तो कौन किस बात में परफेक्ट है, वह मुझे देखना है। ऐसा नहीं सोचती कि यह ऐसा है, वैसा है। मैं होशियार हूँ या मैं यह नहीं सोचती मैं दादी हूँ। हम सदैव स्टूडेन्ट हैं। कोई का कैसा भी व्यवहार है, चलन है, दृष्टि-वृत्ति है, हमें उनसे सीखना है। बाप शिक्षक है, पर हम हर एक से शिक्षा लें तो हमारी दृष्टि ऐसी रहती जिससे न खुद में ईगो आता, न कभी किसी बात के लिए नफरत आती है। यह भी फाइन है, गुड है। इनसे यह अच्छाई लेनी है, बुराई नहीं लेनी है। ईगो बुराई पैदा करता है। बाबा कहते कभी किसी को बुरे भाव से नहीं देखो। बुराई सबमें है, तुम बुराई नहीं देखो, अच्छाई देखो। न बुराई को बुद्धि में लाओ। बुद्धि में बुराई आने से चिन्तन चलेगा। चिन्तन चलने से दृष्टि जायेगी, फिर वैसा व्यवहार होगा फिर अन्दर का प्यार टूट जायेगा। लेकिन यदि उसके लिए सद्भावना है तो उसमें जो भी शुभ है वह लेना है अशुभ नहीं। तो यह नॉलेज अथवा योग हमको श्रेष्ठता, अच्छाई वा ऊँचाई लेना सिखाता है। श्रेष्ठता लेना ही गॉडली स्टूडेंट बनना है। सिर्फ कोर्स पूरा किया माना मैं स्टूडेंट हूँ। छोटे वा बड़े जिसमें जो विशेषता है वह लेना–इसका ही नाम है गॉडली स्टूडेन्ट। बाबा गुणों का भण्डार है। परन्तु देवतायें भी सर्वगुण सम्पन्न हैं। हमें बाप समान बनना है तो हमें इतने गुण धारण करने हैं, सभ्यता से चलना है-यह भी बहुत बड़ा गुण है। सभ्यता वाले मधुर बोलेंगे, धीरे चलेंगे। काम करेंगे तो बहुत प्यार से, देखेंगे तो भी सम्मान से। सभ्यता लव सिखाती, रिस्पेक्ट देना सिखाती, मधुरता सिखाती है। हर बात में सभ्यता की दरकार है। यह श्रेष्ठ मैनर्स हैं। सभ्यता वाले के पास ईगो नहीं आता है।

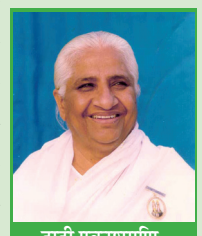
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

इनकी नज़रों में बाबा...

बाबा को सबसे अधिक पसंद 'पवित्रता'

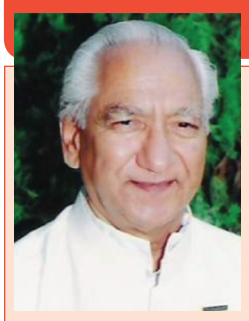

परम पवित्र परमात्मा और उनके रंग में रंगी हुई ब्रह्मा बाबा की आत्मा (बाप-दादा) दोनों को ही पवित्रता धारण किये हुए बच्चे सबसे अधिक प्यारे लगते थे। जितना मन-वाणी-कर्म से पवित्र उतना ही वह बापदादा के समीप था और है। दुनिया में यह जो मान्यता प्रचलित थी कि स्त्री-पुरुष इकट्ठे रहकर पवित्रता धारण नहीं कर सकते, बापदादा ने इस असंभव बात को संभव करके बताया। हज़ारों युगलों को योगबल से प्रैक्टिकल जीवन में कमल पुष्प के समान पवित्र रहना सिखाया, क्योंकि पवित्रता ही सच्चे सुख-शांति की नींव है। एक बार मुम्बई में एक नौजवान युगल (पति-पत्नी) बापदादा से मिलने के लिए आये। बाबा ने उन्हें कुछ मिनट ज्ञान की शिक्षा देकर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का एक चित्र भेंट करते हुए कहा - "बच्चे, अगर इस अंतिम जन्म में पवित्रता धारण करोगे तो 21 जन्मों के लिए भविष्य में इन लक्ष्मी-नारायण जैसा जीवन पाओगे। कहो बच्चे, इस बूढ़े बाबा की बात मानोगे? शिव बाबा तुम्हें इन (पिताश्री) द्वारा डायरेक्ट कह रहा है, तो क्या बाप की बात नहीं मानेंगे?" शिव बाबा के मधुर महावाक्यों का उस युगल को ऐसा तीर लगा कि दोनों ने उसी समय बाबा के सामने जीवन-भर पवित्र रहने की प्रतिज्ञा की और पवित्रता की राखी एक-दूसरे को बांधी। बापदादा ने फिर उनका बहुत स्वागत किया, क्लास में महिमा की। वह युगल आज दिन तक पवित्र हैं और रहेंगे। है किसी मनुष्य की ताकत जो ऐसे नौजवान युगलों को सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करा सके! यह तो स्वयं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का ही कर्त्तव्य है जिसने साकार ब्रह्मा द्वारा एक सेकेण्ड में उस युगल की एक-दूसरे के प्रति दृष्टि और वृत्ति का परिवर्तन किया। ऐसे एक नहीं, हज़ारों युगलों के उदाहरण हैं। - **ब्र.कु. निर्वैर,मुख्य सचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

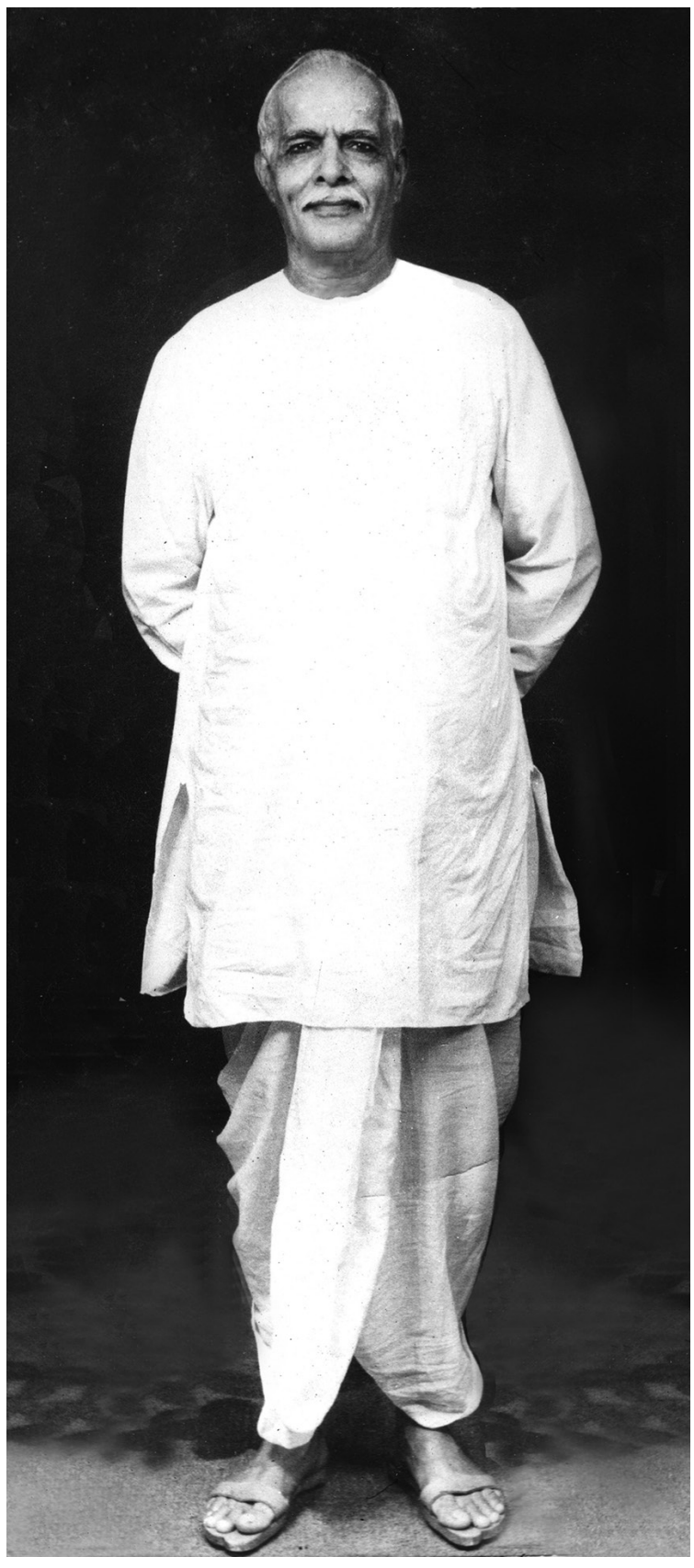

ब्रह्मा बाबा का हर श्वास विश्व सेवा अर्थ

मुझे ब्रह्मा बाबा के साथ रहने का अवसर मिला। उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया। स्वयं बाबा ने मुझे हर शिक्षाओं से सुसज्जित किया। उन्होंने हर श्वास विश्व कल्याण अर्थ सफल किया। बाबा की अथक और बेहद की सोच ने मुझे प्रभावित किया। मैं जब भी बाबा से मिलता था, तो बाबा मुझे यज्ञ के बारे में और शिव बाबा के विश्व परिवर्तन के कार्य के बारे में सूक्ष्मता से समझाते थे। मैं भी आतुर रहता था। ऐसे बाबा को मैं कैसे धन्यवाद करूँ! जैसा बाबा ने मुझे प्यार किया, वैसे सभी को बाबा का असीम प्यार अनुभव होता था और ये अविस्मरणीय है।

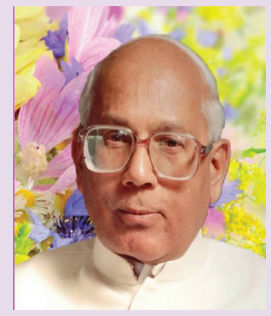

बाबा विश्व कल्याण की सेवा में सदा रहे

एक बार ब्रह्मा बाबा की तबियत थोड़ी बिगड़ने की वजह से डॉक्टर ने सलाह दी कि बाबा बहुत जल्दी उठते हैं, दिन में रेस्ट (विश्राम) भी करते नहीं, आप इनको रेस्ट दिया करो, इनको रेस्ट लेने के लिए कहो। मुझे याद है, उस समय मैं मधुबन में ही था। दीदी मनमोहिनी जी और दो-चार भाई-बहनों ने मिलकर बाबा से कहा कि "बाबा आप अमृतवेले योग में नहीं आइये। आप तो रात को देरी से सोते हैं और विश्व सेवा के बारे में सोचते रहते हैं। जब भी हम आपके कमरे में आते हैं, आप जागते रहते हैं। आप दिन-रात योग तो लगाते ही हैं। इसलिए थोड़े दिनों के लिए कृपया सुबह अमृतवेले में मत आइये।" बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम क्या कहती हो! अमृतवेले न उठूँ! यह कैसे हो सकता है! उस ऑलमाइटी बाबा ने हमारे लिए समय दे रखा है, उसको कैसे छोड़ूँ!" उन्होंने बाबा से फिर बहुत विनती की कि बाबा डॉक्टर कहते हैं, आपको विश्राम लेना बहुत ज़रूरी है। बाबा ने कहा, "बच्ची, मैं किस डॉक्टर की बात सुनूँ? यह डॉक्टर कहता है, अमृतवेले रेस्ट करो, वो सुप्रीम डॉक्टर कहता है, अमृतवेले उठकर मुझे याद करो। मैं किसकी बात मानूँ? मुझे सुप्रीम डॉक्टर की बात ही माननी पड़ेगी ना! इसलिए मैं अमृतवेले रेस्ट नहीं कर सकता।" ऐसा कहकर बाबा ने उनकी बात को इंकार कर दिया। दीदी जी ने नहीं माना। उन्होंने कहा कि "बाबा, डॉक्टर ने बहुत कहा है, इसलिए आप कम से कम दो-तीन दिन मत आओ। हमारी यह बात आपको माननी ही पड़ेगी।" बहुत ज़िद करने के बाद बाबा ने कहा, "अच्छा बच्ची, सोचूंगा।" जब रोज़ के मुआफिक हम अमृतवेले जाकर योग में बैठे तो बाबा भी चुपके से आकर योग में बैठ गये। देखिये, बाबा ने अपनी ज़िन्दगी में एक दिन भी अमृतवेले का योग मिस नहीं किया। कैसी भी बीमारी हो, कितनी भी उम्र हो, उन्होंने ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन नहीं किया। उन दिनों कितने सेवाकेन्द्र थे! मुश्किल से 10-15 होंगे। जब मैं ज्ञान में आया था, कोई भी सेन्टर नहीं था सिवाय दिल्ली कमला नगर के। पहला जो सेंटर खुला विश्व भर में, वो कमला नगर सेंटर था, जहाँ हम रहते थे। दादी जानकी वहीं रहती थीं, मनोहर दादी और मनमोहिनी जी भी वहीं रहती थीं। इकट्ठे हम रहते थे। छोटी सी जगह थी, लेकिन हम इकट्ठे रहते थे, इकट्ठे खाते-पीते थे, इकट्ठे सेवा करते थे। वो कितने अच्छे दिन थे! तब से इन दादियों के साथ हमारा संबंध है। सन् 1951 में ये सब सेवा में आ गये, सन् 1952 में हम भी आ गये। सेवा तो लगभग इकट्ठी शुरू की। उससे पहले ये कराची या हैदराबाद में रहे।

- **ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा**

हर चरित्र में ज्ञान और अनुभव का समावेश

मेरे लौकिक पिता ने जब शरीर छोड़ा तो उनकी 30 ड्रेस मैंने अपने प्रयोग के लिए यह सोचकर रख ली कि ये मुझे फिट आती हैं और कुछ बचत हो जाएगी। आमतौर पर तो हम ऐसे कपड़ों को दान में किसी को दे देते हैं पर मैंने नहीं दिये। मधुबन में एक बार जब बाबा से छुट्टी लेने गया तो मैंने वो ड्रेस पहन रखी थी। बाबा के पास कई सम्पर्क वाले ऐसे बच्चे आते थे जो विदेश में रहते थे और वहाँ की रेडिमेड ड्रेस बाबा के पास छोड़ जाते थे। बाबा भी उन्हें रख लेते थे और ज़रूरत अनुसार बच्चों को देते रहते थे। बाबा ने पहले भी मुझे ऐसी ड्रेस दी थी, इस बार भी बाबा ने मुझे ऐसी एक और ड्रेस देनी चाही। मैंने अपनी इकॉनमी का वर्णन करते हुए कहा, लौकिक पिता जी के शरीर छोड़ने पर मैंने उनकी सभी ड्रेस रख ली हैं बाबा, देखो मुझे पूरी फिट आई हैं। बाबा मुस्कुराए फिर बोले, बाबा का दिया पहनोगे तो बाबा याद आएगा, लौकिक पिता का दिया पहनोगे तो लौकिक पिता याद आएगा। बाबा की इस गुह्य धारणा की बात सुनकर मैंने बाबा द्वारा दी गई ड्रेस ले ली।

कोई कुछ देता है तो उसे यज्ञ में समर्पित कर दो

सचमुच लौकिक पिता की ड्रेस पहनते ही लौकिक पिता का संकल्प आता था। बाबा तो यहाँ तक कहता है, किसी आत्मा से सौगात न लो। कोई कुछ देता है तो उसे यज्ञ में समर्पित कर दो। अगली बार मधुबन आया तो मैंने वे सारे ड्रेस यहाँ ही दे दिये। फिर अगली बार देखा, एक सेवाधारी भाई मेरे पिता की शर्ट पहले धोबीघाट पर कपड़े धो रहा था। शर्ट देखते ही मेरे मन में आया, मेरे पिता जी की शर्ट! यज्ञ में देने के बाद भी देखते ही वही मेरेपन की स्मृति आ गई। यदि पहनता रहता तो कितनी लौकिक स्मृतियाँ आतीं। एक शिवबाबा को याद करने के लिए अन्यों को भूलना ज़रूरी है, उसके लिए इस प्रकार की धारणा ज़रूरी है। बाबा सिखाते हैं, तुम्हारा ध्यान कहीं ना जाए। प्यारे बाबा पत्र के नीचे लिखते थे, अच्छा, सब बच्चों को याद प्यार। फिर लिखते थे, खुश रहो, आबाद रहो, ना बिसरो, ना याद रहो। बाबा कहते थे, मैं बच्चों को याद करूँ या शिवबाबा को याद करूँ!

- **ब्र.कु. बृजमोहन,अति. सचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

स्वास्थ्य सम्पूर्ण स्वास्थ्य पायें 'ॐ' ध्वनि से

एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी में पुनि आध...। तुलसी चर्चा राम की, हरै कोटि अपराध...।।

1 घड़ी = 24मिनट
1/2 घड़ी = 12मिनट
1/4 घड़ी = 6 मिनट

क्या ऐसा हो सकता है कि 6 मिनट में किसी साधन से करोड़ों विकार दूर हो सकते हैं।

उत्तर है, हाँ हो सकते हैं। वैज्ञानिक शोध करके पता चला है कि.... सिर्फ 6 मिनट 'ॐ' का उच्चारण करने से सैकड़ों रोग ठीक हो जाते हैं जो दवा से भी इतनी जल्दी ठीक नहीं होते....।

★ छ: मिनट 'ॐ' का उच्चारण करने से मस्तिष्क में विशेष वायब्रेशन(कम्पन) होता है... और ऑक्सीजन का प्रवाह पर्याप्त होने लगता है। कई मस्तिष्क रोग दूर होते हैं.. स्ट्रेस और टेन्शन दूर होती है, मेमोरी पॉवर बढ़ती है...।

★ लगातार सुबह शाम 6 मिनट 'ॐ' के तीन माह तक उच्चारण से रक्त संचार संतुलित होता है और रक्त में ऑक्सीजन लेवल बढ़ता है। रक्त चाप, हृदय रोग, कोलेस्ट्रोल जैसे रोग ठीक हो जाते हैं

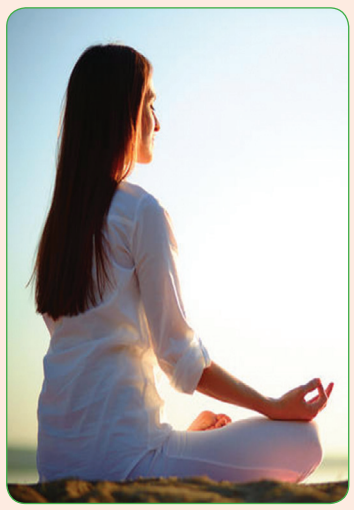

और विशेष ऊर्जा का संचार होता है।

★ मात्र 2 सप्ताह दोनों समय 'ॐ' के उच्चारण से घबराहट, बेचैनी, भय, एंग़्ज़ाइटी जैसे रोग दूर होते हैं।

★ कंठ में विशेष कंपन होता है, मांसपेशियों को शक्ति मिलती है। थाइराइड, गले की सूजन दूर होती है और स्वर दोष दूर होने लगते हैं...। पेट में भी विशेष वायब्रेशन और दबाव होता है...।

★ एक माह तक दिन में तीन बार 6 मिनट तक 'ॐ' के उच्चारण से पाचन तन्त्र, लीवर, आँतों को शक्ति प्राप्त होती है, डाइजेशन सही होता है और सैकड़ों उदर रोग दूर होते हैं...।

★ यह उच्च स्तर का प्राणायाम होता है जिससे फेफड़ों में विशेष कंपन होता है..। फेफड़े मज़बूत होते हैं, श्वसन तंत्र की शक्ति बढ़ती है, 6 माह में अस्थमा, राजयक्ष्मा जैसे रोगों में लाभ होता है और आयु बढ़ती है।

ये सारे रिसर्च (शोध) विश्व स्तर के वैज्ञानिक स्वीकार कर चुके हैं।

ज़रूरत है छ: मिनट रोज़ करने की....।

नोट:- 'ॐ' का उच्चारण लम्बे स्वर में करें। आप सदा स्वस्थ और प्रसन्न रहें, यही हमारी मंगल कामना है।

उनके कदम यहाँ... - पेज 2 का शेष

सुकून भरा समाधान पाता। बाबा का कभी किसी ने विरोध नहीं किया। करे भी क्यों! क्योंकि बाबा के हृदय में किसी भी आत्मा के प्रति कोई ऐसा भाव रहा ही नहीं, सदा शुभ ही भाव रहा। बाबा के सामने कोई कैसा भी आया, लेकिन लौटते वक्त वो मुस्कुराते हुए ही गया। बाबा ने सोने का तरीका भी सिखाया। दिन भर की वाहयात बातें या कारोबार की बातें परमात्मा के सामने समर्पित कर हल्के होकर सोना और सुबह उठते ही परमात्मा के सुंदर श्रेष्ठ स्मृतियों से आरंभ करना व अपने को सजग बनाते हुए दिनचर्या की शुरुआत करना सिखाया। इतने श्रेष्ठ संकल्प व जीवन जीने का बल उन्हें कहाँ से मिल रहा था, ये सूक्ष्म बात हमें समझना होगा। परमात्मा को कहते हैं निराकार, जो इन चर्म चक्षुओं से दिखाई नहीं देता, फिर भी वो हमारा माता-पिता भी है, गुरू-शिक्षक भी है, वो कैसे! यह गुह्य बात ब्रह्मा बाबा ने समझ भी ली और अपने मन-मस्तिष्क में संजो भी ली। तभी वे परमात्मा की शिक्षाओं और उनकी शुभ-भावनाओं से एकाकार हो गए और विश्व कल्याण के कार्य में जुट गए। परमात्मा के निर्देशानुसार उन्हें ये श्रेष्ठ स्वमान मिला कि तुम साधारण नहीं हो, तुम तो इस जहान के नूर हो। तुम जैसा करोगे, वैसी ही दुनिया बनेगी। बाबा का रहना तो इस धरा पर ही था, लेकिन कहते हैं कि 'उनके कदम यहाँ थे और उनकी निगाहें वहाँ थीं...।' माना बाबा रहते यहाँ थे, लेकिन उनके हर कर्म से देवत्व की झलक आती थी। मानो वे रहते तो धरा पर ही थे, पर जैसे कि फरिश्ता। फरिश्ता माना ही सभी की मदद करना, सुकून देना, ना कि किसी के भावावेश में फँसना। आज भी अव्यक्त रूप में उनका मार्गदर्शन हमारे जीवन को सही दिशा दे रहा है तथा पल-पल हमारे भाग्य को उज्जवल बनाने की प्रेरणा दे रहा है। ऐसे महान भगीरथ, सबके भाग्यविधाता, प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य तिथि 18 जनवरी पर हम सभी दिल के स्नेह सम्पन्न पुष्प अर्पित करते हैं और उनके कदम पर कदम रख आगे बढ़ने का दृढ़ संकल्प करते हैं।

तोशाम-हरियाणा। सांसद धर्मवीर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंजू। साथ हैं सरपंच देवराज गोयल, मार्केट कमेटी चेयरमैन मतलेश सरदाना तथा अन्य।

केशवरायपाटन-राज.। मेले में आयोजित आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी के अवलोकन पश्चात् समूह चित्र में उपप्रधान अमृत लाल, कांग्रेस जिलाध्यक्ष सी. एल. प्रेमी, वार्ड पार्षद पंकज पाण्डे, ब्र.कु.कौशल्या तथा अन्य।

मुम्बई-दिंडोशी। 'ज्ञान धारा मेडिटेशन सेंटर' के उद्घाटन अवसर पर अपनी शुभकामनायें देते हुए कॉर्पोरेटर विनोद मिश्रा। मंचासीन हैं ब्र.कु. कुन्ती, ब्र.कु.दिव्या, ब्र.कु.रंजन, ब्र.कु.भानू तथा ब्र.कु. राज।

उदवाड़ा-गुज.। पीस मैसेन्जर बस का स्वागत करते हुए गांव के अग्रणी ठाकुर भाई पटेल, सरपंच रश्मिका पटेल, ब्र.कु. पारुल, ब्र.कु. मीनल व अन्य।

राँची-झारखण्ड। भारत के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविन्द को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.निर्मला।

भूल जायें, दोहरायें नहीं...

- गतांक से आगे...

प्रश्न:- हरेक उस व्यक्ति को लेट्स आऊट करेंगे जो हमारे साथ सहानुभूति रखेगा। अब हमें ये समझ में आ रहा है कि ये दर्द जो क्रियेट हो रहा था उसे मैं ही क्रियेट कर रही थी।

उत्तर:- हमें ऐसा लगता है कि वो परिस्थिति की वजह से हो रहा है। ये दर्द मैं क्रियेट कर रही हूँ तो इसे खत्म करने की शक्ति भी हमारे पास है। एक बार हम यह भी महसूस करते हैं कि हम गलत कर रहे हैं, ऐसे इंसान को हमें माफ करना ही नहीं चाहिए लेकिन हमें यह समझना है कि हम उनको माफ नहीं कर रहे हैं, हम अपने-आपको माफ कर रहे हैं ये याद रखना है। वो घाव है उसकी हम हीलिंग भी कर सकते हैं या फिर उस घाव को रोज़-रोज़ और गहरा भी कर सकते हैं। अपने-आपसे प्यार करना शुरू करो। हो सकता है कि किसी ने आपके साथ गलत किया हो, लेकिन अब नफरत क्रियेट करके हम अपने साथ गलत कर रहे हैं। दूसरों को हम ना रोक पायें जिन्होंने गलत किया, लेकिन खुद को तो रोक सकते हैं। हम अपने से नफरत करके अपने को बड़े-बड़े घाव दे रहे हैं, ये उन घावों से भी बड़ा है जो किसी और ने दिया होगा।

प्रश्न:- दूसरों से नफरत करके भी हम यही क्रियेट कर रहे हैं।

उत्तर:- अपने आपसे प्यार करो, अपने को क्षमा करो और अपने ऊपर रहम करो। हमें किसी की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है, दया भी अपने आपसे खुद के लिए, उसके लिए हमें इसको अब खत्म करना पड़ेगा। बहुत बड़ी बात है। लेकिन मन की शक्ति को लेकर उसको छोटा करो, तभी हम इससे बाहर निकल पायेंगे। हम ही अपने-आपको कहते है मैं तो उसको कभी नहीं भूल सकती, अपने-आपको कहो कि मैं उसे भूल गयी, मैं बार-बार उसको रिपीट

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

करने वाली नहीं हूँ।

प्रश्न:- पहले मुझे समझ में नहीं आता था कि अपने लिए क्या करना होता है। आपको उनको माफ करना है, उनको भूलना है अपने लिए। अपने लिए मतलब ये नहीं कि आप बहुत महान् बन जाओगे। लेकिन अचानक मुझे यह एहसास होता है कि यह खराब नहीं है, जितना जो कुछ भी हो रहा है चाहे मैं छोटी सी चीज़ के लिए दर्द क्रियेट कर रही हूँ, गुस्सा क्रियेट कर रही हूँ, उसमें कोई कुछ नहीं कर सकता है। अब हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि हमें अपने-आपको कितना प्यार करना पड़ेगा।

यदि हम किसी के प्रति अपने अंदर गुस्सा या नफरत की भावना रखते हैं तो उससे नुकसान हमारा अपना ही है। इससे एक बहुत बड़ा सूत्र मिला है, इसे ज़रूर आप अपने जीवन में लागू करें, बहुत पुरानी बातें भूलेंगे, बहुत कुछ पकड़कर बोझ में जी रहे हैं, वो भी छूट जायेगा।

उत्तर:- इसे ज़रूर अपने जीवन में लागू करें, क्योंकि इसमें सबसे बड़ा फायदा हमारा ही है। -क्रमशः

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमारे मन के विचार जिसको हम आइडिया भी कहते हैं, जिसे हम लक्ष्य भी कहते हैं, जिसको पाने के लिए हमें खुद पर विश्वास करने की ज़रूरत है। हमें अपना मस्तिष्क खुला रखना होता है। चूंकि मस्तिष्क हमारे मन के सॉफ्टवेयर का एक हार्डवेयर है। इसलिए हमें अपने हार्डवेयर को भी सॉफ्टवेयर के हिसाब से खुला रखना पड़ता है। कई बार बहुत अच्छा सोचने के बाद भी हम उसे एक्ज़ीक्यूट नहीं कर पाते।

हम सबके मन में असीमित शक्तियाँ हैं। हमारे पास स्मरण शक्ति और सोचने की क्षमता अद्भुत है। जिसका कोई भी विश्व का एडवांस कम्प्युटर भी बराबरी नहीं कर सकता। हमारे अन्दर कल्पना शक्ति असीम होती है। जिसके द्वारा बहुत सारी आशायें और उद्देश्यों को हम साकार कर सकते हैं। हमारा मन जो सोचता है वही मस्तिष्क के द्वारा आस्था के रूप में प्रकट होकर घटना घट जाती है। इसका अर्थ यही हुआ ना कि जितने भी हमारे अन्दर विचारों का तन्त्र है वो सारा हमारे पूरे शारीरिक संरचना को बनाने में मददगार है। आज हम दवाइयां खाते हैं, तरह-तरह के जलपान लेते हैं, तरह तरह के रसायनों का सेवन करते हैं। लेकिन ये सेवन मात्र से ठीक नहीं होता। इन सभी खाद्य पदार्थों को संचारित करने का कार्य मन करता है। हमारा बीमारियों के उपचार का एकमात्र स्रोत हमारा मन है, ना कि दवाइयां। उदाहरण के लिए - जब हमारे घुटने में दर्द होता है कभी, तो हम दवाई पेट में खाते हैं, लेकिन दर्द घुटने का ठीक होता है। इसलिए डॉक्टर कहता है कि यह घुटने के दर्द की दवाई है, तो वह ठीक हो जाता है, यह बात हमारे मन ने स्वीकार कर ली होती है। अर्थात मन जिस बात को स्वीकार

करता जाता है, उस बात का प्रभाव पड़ता जाता है। आज होम्योपैथी इसी सिद्धान्त को लेकर कार्य करता है। उसमें सबकुछ मन द्वारा दिये गये विचारों के आधार पर होता है जिसे प्लेसबो इफेक्ट कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि मान लो जैसे एक साधारण व्यक्ति की आँख पर पट्टी बांध दी जाए तथा उनके पैरों में सुई चुभा दी जाए, उन्हें सिर्फ इतना कहा जाए कि तुम्हारे पैर को साँप ने काट लिया एकाएक, तो धीरे-धीरे वो उसी भाव में खोता जाएगा जैसा कि सर्प के काटने पर होता है और थोड़ी देर के बाद आप देखेंगे कि व्यक्ति मर जायेगा। तो हमारा यही सिद्धान्त हमारे जीवन पर भी तो लागू होगा ना! चलो अगर किसी विचार का प्रभाव आपकी परिस्थितियों पर, व्यक्तियों पर नहीं भी दिखता हो, तो भी घटना घट रही है। भले उसका प्रभाव देर से आये लेकिन आयेगा ज़रूर।

जब आप कोई प्रार्थना करते हैं या मेडिटेशन करते हैं, उस समय की तरंगें बहुत सकारात्मक होती हैं और बहुत तीव्रता से फैलती हैं। फैलने के आधार से ही वहाँ का वातावरण पॉवरफुल होता जाता है। तो आप भी चाहो तो अपने घर का, ऑफिस का माहौल बदल सकते हैं। बस मन को पॉज़ीटिव शक्तियों के साथ रखना होगा।

दिन दोगुना, रात चौगुना बढ़ने वाला विकारों का प्रकोप हमें पॉज़ीटिव बात नहीं सोचने देता। इसीलिए मन की शक्ति को बढ़ाने के लिए परमात्म शक्ति की बहुत आवश्यकता है। इसीलिए कहा जाता है कि हमें परमात्मा का संग करना चाहिए। इससे हमारा मन और ज़्यादा शक्तिशाली हो जाएगा और हम जीवन में सफल हो जायेंगे।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-6 (2017-2018)

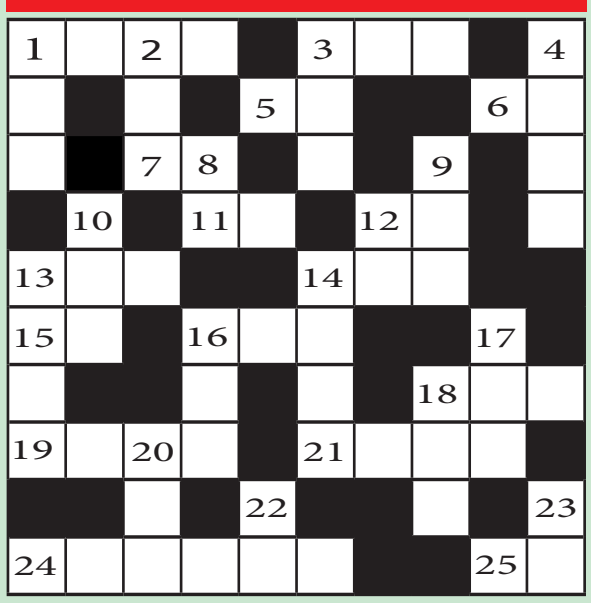

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. ....की दुनिया से दूर चले हम (3)
2. नष्ट, ...सामने खड़ा है (3)
3. संसार, जगत, जग (3)
4. पाण्डवों और इन्द्र की राजधानी (4)
8. आने वाले....की तुम तकदीर हो (2)
9. राजा जनक की पुत्री, राम की पत्नी (3)
10. भोजन, खाद्य पदार्थ (3)
12. मूल, तुम बच्चे कल्पवृक्ष की....में बैठे हो (2)
13. अर्थ, अभिप्राय, उद्देश्य (4)
14. आपस में कभी....नहीं करनी है, वाद-विवाद (2-2)
16. शक्ल, रूप, बनावट (3)
17. नगर, गांव का विलोम (3)
18. बार-बार कहना, जपना (3)
20. शत्रु, वैरी (3)
22. पथ, बाट (2)
23. दोस्त, सखा (2)

बायें से दायें

1. रोजगार, नौकरी (4)
3. रावण ने भारत की कितनी....कर दी है, बुरा हाल (3)
5. सूर्य का पुत्र, सप्ताह में एक दिन (2)
6. देवताओं का राजा (2)
7. अनुमान, दुविधा (2)
11. लाख, देखना (2)
12. प्रजा, लोग (2)
13. प्रसिद्ध, श्रेष्ठ (3)
14. झरोखा, वातायन (3)
15. गीला, नम (2)
16. सुगबुगाहट, पूर्व सूचना (3)
18. कूप से पानी निकालने का बैलों द्वारा चलाया जाने वाला यन्त्र (3)
19. शक्तिशाली, शूरवीर (4)
21. एक आवश्यक सब्जी जो गोल लाल और सब्जी का स्वाद है (4)
24. जीवन-निर्वाह का ढंग, आचरण (3-3)
25. रथ पर सवारी करने वाली आत्मा.... है शरीर रथ है (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

नई दिल्ली। भारत के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद से विभिन्न धर्म प्रतिनिधियों के मुलाकात के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा दीदी तथा अन्य।

समस्तीपुर-बिहार। 'समाधान पायें-खुशियाँ मनायें' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,मा.आबू, डी.एम. प्रणव कुमार, फैमिली जज सुभाष कुमार प्रसाद, ए.डी.एम. संजय कुमार उपाध्याय, सुधा डेयरी के एम.डी. डी.के.श्रीवास्तव तथा ब्र.कु. कृष्ण।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। सदर विधायक हरिशंकर माहौर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शांता। साथ हैं ब्र.कु. मीना तथा अन्य।

चरखी दादरी-हरि.। 'मेरा भारत व्यसन मुक्त भारत अभियान' के अन्तर्गत ए.पी. एस. स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में एक्सीलेन्सी अवॉर्ड से ब्र.कु.प्रेमलता, ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु.प्रियंका तथा ब्र.कु.दिनेश को सम्मानित करते हुए प्रबंधक नवीन कुमार।

सिद्धेश्वर-ओडिशा। 'रुरल सीनियर सिटीज़न अवेयरनेस कैम्प' में अतिथियों को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शिवकन्या, सरपंच अनिता स्वैन, प्रो.पी.सी साहू, प्रो.के.के. पाणिग्रही, डॉ. ई. जयन्ता राव, डॉ. वी.आर.राजू, प्रो. बी.नागेश्वर रॉव सुबुद्धि, डॉ.सरोज मिश्रा, सीनियर सिटीज़न फोरम प्रेसीडेंट रास बिहारी दास, राजीव बिशोयी तथा अन्य।

गुलबर्गा-कर्नाटक। सेवाकेन्द्र में आयोजित वैज्ञानिकों के 'स्नेह मिलन कार्यक्रम' के दौरान समूह चित्र में श्रीलंका, डेनमार्क, पर्सिया तथा भारत के विविध प्रान्तों के विश्व विद्यालयों के वैज्ञानिक, आई.पी.एस. शशिकुमार, ब्र.कु. विजया, ब्र.कु. प्रेम सिंह तथा अन्य।

इनकी नज़रों में बाबा...

स्वयं बाबा ने दिया वरदान...

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जब परिचय हुआ। तब मेरी उम्र लगभग 14 साल की थी। हम मुम्बई में रहते थे। एक बार जब दादी बृजेन्द्रा जी होली के त्योहार के निमित्त आबू जाने लगीं तो उनके साथ नानी माँ, मैं और मेरी लौकिक बड़ी बहन भी माउण्ट आबू आये।

बाबा की पारखी दृष्टि

हम सभी तैयार होकर मम्मा बाबा के पास गये। वे संदली पर बैठे थे मानो कि राज दरबार लगी हो। उस समय देश में कोई ज़्यादा ब्रह्माकुमारी सेंटर नहीं खुले थे। मोहिनी बहन लखनऊ से आये थे, जगदीश भाई भी आये थे। हम थोड़े लोग थे। सभी दादियाँ भी आये हुए थे। वे भाई बहन भी थे जो बाबा के साथ कराची से ही यज्ञ में थे। दादी बृजेन्द्रा ने हमको बाबा मम्मा के सामने बिठाया। बाबा ने बहुत अच्छी तरह से हमें दृष्टि दी। बाबा पहचान गये कि ये बच्चियाँ कितनी सात्विक हैं। बाबा ने मुझे देखकर कहा कि यह मेरी बच्ची पूरे गुजरात का उद्धार करेगी। बाबा ने तभी से ही मुझे वरदान दे दिया था। हमको बाद में यह पता चला कि बाबा जब कराची में थे, तब भी कहते थे कि गुजरात के

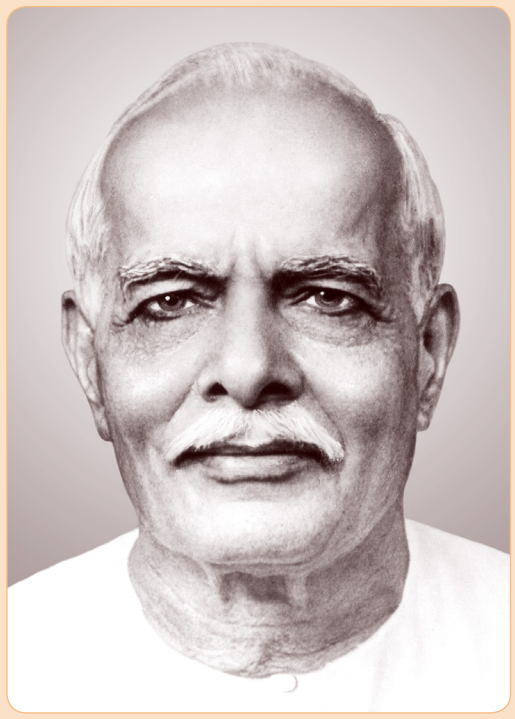

भावुक भक्त मुझे बहुत याद आते हैं। तो बाबा जब भी मुझे देखते थे तो यही कहते थे कि जब अहमदाबाद में सेंटर खुलेगा तो बच्ची को वहीं रखेंगे, बच्ची को वहीं के निमित्त बनायेंगे।

मम्मा जैसा बनने की लगन

हमने माउण्ट आबू में बहुत उमंग उत्साह से होली खेली। बाबा मुझसे पूछते थे कि मम्मा अच्छी लगती है? मैं कहती थी, हाँ बाबा। फिर पूछते थे, मम्मा जैसी बनेगी? मैं कहती थी, हाँ बाबा। मन में रहता था कि मुझे मम्मा जैसा बनना है। मम्मा की एकदम देवताई चाल थी। चलते समय कदमों की आवाज़ तक नहीं आती थी, पता भी नहीं चलता था। बाबा कुछ भी पूछते थे तो बहुत प्यार से जवाब देती थी। बाबा के साथ हम रम गये थे। महीनों बाबा के साथ रहे, घर जाने की इच्छा नहीं होती थी। हम बाबा को कहते बाबा हमको घर नहीं जाना है। बाबा प्यार से कहते... बच्ची, जाना तो होगा ही। तब हम मुम्बई आ गये।

मम्मा सदा सबको दैवी रूप में ही देखती

उस समय मुम्बई में कोई सेंटर न होने के कारण मधुबन से मुरली घर पर आने लगी। मुझे दो चोटी बनाने का बहुत शौक था। एक बार मम्मा ने कमरे में ले जाकर मेरी चोटी खोली और कहा, बच्ची मालूम है, देवियाँ दो चोटी नहीं करतीं। उन्हें कोई मिसाल देना होता था तो हमेशा देवताओं का मिसाल देकर समझाती थीं। रात्रि को गुडनाइट करने जाते थे तो भी बहुत प्यार से मिलती थीं। मैंने पक्का लक्ष्य रख लिया था कि मुझे मम्मा की तरह धारणाओ में पक्का बनना है। हमारा ध्यान मम्मा बाबा के सिवाय कहीं और गया ही नहीं। आज तक भी हम उनकी ही पालना में पलते आ रहे हैं। **- ब्र.कु. सरला,ग्राम विकास प्रभाग अध्यक्षा,गुज.**

बाबा ने मुझे नष्टोमोहा बना दिया...

सन् 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गयी थीं, तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अन्दर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे आत्म-विभोर कर दिया। बाबा ने मेरे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्दी ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है – ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की और मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

बाबा के वो बोल मेरे लिए वरदान सिद्ध हुए

कुछ वर्ष अमृतसर सेवाकेन्द्र पर रहते हुए मुझे दीदी चन्द्रमणि जी की अलौकिक पालना मिलती रही और ईश्वरीय सेवा का कारोबार सम्भालने की कला भी प्राप्त हुई। उस पालना और प्रशिक्षण से मुझमें बहुत योग्यताएं भर गयीं। दीदी चन्द्रमणि जी के जीवन का प्रभाव इतनी गहरी रीति से मेरे जीवन पर पड़ा कि मुझमें निर्भयता और दैवीगुणों की धारणा प्रबल होती गयी। आयी हुई नई कन्याओं में ईश्वरीय धारणाओं के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के कार्य की ज़िम्मेवारी भी दीदी मुझे देती थीं। उसमें भी मुझे अधिक सफलता दिन प्रतिदिन मिलती गयी। इस प्रकार ब्राह्मण परिवार में रहते ईश्वरीय सेवा करना और श्रेष्ठ धारणाओं को अपने जीवन में अधिक से अधिक अपनाते जाना, यह मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

बाद में जब हम मधुबन में आये और बाबा से मिले तो बाबा ने कहा कि "बच्ची, तुम मीरा हो, तुम गुणवान हो, तुम अपने को नहीं जानती, बाबा तुम्हें जानता है, तुम बहुत अच्छी सेवा कर सकती हो" – ऐसे वरदानी बोलों से बाबा ने मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया। बाबा ने उस समय मुझे और विश्वरतन दादा को आबू के मिनिस्टर कॉटेज में वी.आई.पीज. की सेवा के लिए भेजा था। मेरी सेवा की लगन को देखकर बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम पटना में सेवा करने जाओ।" पटना में ईश्वरीय सेवा के लिए जाना हुआ और वहाँ पर भी सेवा में बाबा के दिये वरदान अनुसार बहुत अच्छी सफलता मिलती गयी। वहाँ पर बनाया गया म्यूज़ियम उन दिनों बहुत ही अच्छा था जिसको बाबा ने नम्बर वन में रखा था। पटना से जब मैं मधुबन पार्टी लायी तो साकार बाबा ने कहा, "बच्ची ने देखो इतने बड़ों-बड़ों को लाया है, बच्ची सेवा करने में बहुत होशियार है, सफलता इसका जन्मसिद्ध अधिकार है।"

इस तरह अलौकिक जीवन में अनेक अलौकिक अनुभव हुए और होते ही रहते हैं। अभी सदा यही उमंग रहता है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करके इस वसुन्धरा पर आये हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें, ताकि अन्धकार में भटकती हुई करोड़ों आत्मायें प्राण प्यारे बाप से मिलन मना सकें और उसके अविनाशी वर्से की अधिकारी बन सकें। हम भी अब जल्दी से जल्दी बाप समान बनें और बाबा की श्रेष्ठ आशाओं को पूरा करें – यही हमारे जीवन का लक्ष्य रहता है।

- राज बहन, नेपाल,काठमाण्डु

मुज़फ्फरपुर-बिहार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् राज्यपाल महोदय सतपाल मलिक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी व अन्य।

कूच बेहर-प.बं.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सी.एल. बेलवा,डी.आई.जी.,बी.एस.एफ.को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सम्पा। साथ हैं ब्र.कु. पूनम तथा कप्तान रजनीश ।

वलसाड-गुज.। 'राजयोग-शिविर' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रंजन, उपसचिव एस.के कृष्णा चैतन्य, ब्र.कु.सुरेखा, ब्र.कु.चंदन तथा अन्य।

सहरसा-बिहार। 'समाधान पाएं, खुशियाँ मनाएं' कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, संदीप भाई,पूणे, एस.पी अश्विनी कुमार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.स्नेहा, कृष्ण भाई तथा अन्य।

नई दिल्ली-नेब सराय। आई.यू.सी. कमेटी रूम,इग्नू सेंटर में 'इम्प्रूविंग एडमिनिस्ट्रेटिव स्किल एण्ड एम्पावरिंग ऑफ योर माइंड' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रजिस्ट्रार डॉ.जितेन्द्र शिवत्व तथा उपाध्यक्ष एस.बी. अरोरा को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु.योगिनी एवं ब्र.कु. पीयूष।

समस्तीपुर-बिहार। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में किसानों को जागरुक करते हुए ब्र.कु. भाई। साथ हैं ब्र.कु. सविता व अन्य भाई बहनें।

बाबा ने कहा... 'तुम संतुष्टमणि हो!!'

- ब्र.कु. संतोष,सायन,मुम्बई

सन् 1965 में मुझे बृजेन्द्रा दादी के साथ माउण्ट आबू जाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब पाण्डव भवन पहुँचे तो वहाँ का शान्त और पवित्र वातावरण भाने लगा। दो घण्टे के बाद हम बाबा से मिलने कमरे में गये। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा, "मीठी बच्ची, पहुँच गई हो न बाबा के पास।" बाबा के मस्तक पर मुझे दिव्य प्रकाश दिखाई दिया। उनका चेहरा चन्दा-सा चमक रहा था क्योंकि ज्ञान सूर्य स्वयं उनमें प्रविष्ट था। पिता श्री जी से प्रथम मिलन ने मेरे मन को मोह लिया और अमिट छाप लगा दी। ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि बहुत समय से बिछड़ा हुआ बच्चा अपने माँ-बाप से मिल गया हो। इस अलौकिक मिलन से जन्म-जन्मान्तर की थकावट मिट गई तथा निश्चय में और भी दृढ़ता आ गई।

पिताजी की स्वीकृति

उस समय मुझे मधुबन में कुछ अधिक दिन रहने का मौका मिला। हर रोज़ मैं बाबा से मिलती थी। हँसी-हँसी में बाबा मुझे कहते थे, "बच्ची, अभी तुम बड़ी हो गई हो, तुम्हें ईश्वरीय सेवा करनी चाहिए, तुम बहुत सेवा कर सकती हो।" बाबा की स्नेह भरी पालना से मेरा मन मधुबन में लगने लगा। एक दिन मैंने कहा, "बाबा, मैं मधुबन में ही रह कर सेवा करूंगी, घर नहीं जाऊंगी।" बाबा ने कहा, "बच्ची, यहाँ रहने के लिए तुम्हारे पिताजी का स्वीकृति-पत्र चाहिए।" तुरन्त मैंने पिताजी को पत्र लिखा कि मैं अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा में लगाना चाहती हूँ, मुझे यह जीवन बेहद पसन्द है, स्वीकृति-पत्र जल्दी भेजिए। जिस दिन हमें वापस आना था उसी दिन पिता जी का स्वीकृति-पत्र मिला। मैं दौड़ती हुई बाबा के पास गई और कहा, "बाबा, मुझे पिताजी ने स्वीकृति दे दी है, अब मैं यहाँ ही रहूंगी।" बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, "बच्ची, अभी तुम छोटी हो, तुम्हें घर वापस नहीं जाना है तो बृजेन्द्रा दादी के साथ सायन सेवाकेन्द्र पर सेवार्थ जाओ।" मैंने कहा, "बाबा, वहाँ तो लौकिक बहनें तथा भाई बार-बार मिलते रहेंगे, मैं सेवा कैसे कर सकूंगी?" फिर

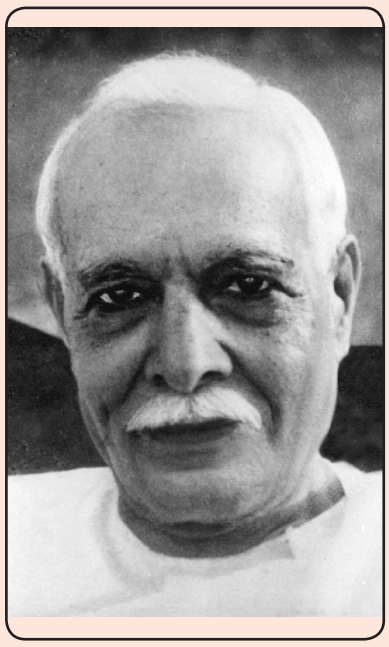

बाबा ने कहा, "बच्ची, पूना जाओ, जनक बच्ची के पास।" मैं वहाँ गई और बहुत अच्छी धारणाएँ सीखी।

सन् 1968 में बाबा मुम्बई आये, मैं पूना से बाबा को मिलने मुम्बई गई। तब बाबा ने मुझे सायन सेवाकेन्द्र पर भेज दिया। उसके बाद बाबा मुझे पत्रों द्वारा प्रेरणा देते थे, "बच्ची, एक जगह नहीं बैठना है, दूसरे सेवाकेन्द्रों पर चक्कर लगाती रहो, बाबा को समाचार बताती रहो। तुम्हें तो चक्रवर्ती बनना है।" सचमुच बाबा की यह प्रेरणा मेरे लिए वरदान ही थी।

जब बाबा अव्यक्त हुए

बाबा के अव्यक्त होने पर मुझे पूर्ण निश्चय था कि बाबा का कार्य चलता आया है, चलता रहेगा। मैं मधुबन में समय प्रति समय सेवार्थ आती थी, तो अव्यक्त बापदादा से मुलाकात होती थी। एक बार बापदादा ने मुझे वरदान दिया, "सदा सन्तुष्टमणि हो, सन्तुष्टता के गुण से सर्व को सन्तुष्ट करती रहती हो। जो स्वयं सन्तुष्ट रहता है उससे सभी सन्तुष्ट रहते हैं इसलिए रजिस्टर बहुत अच्छा है।"

थकना नहीं और रुकना नहीं

बाबा कहते थे, "बच्चे, आप विजयी रत्न हो। विजय का तिलक आपके माथे पर मानो लगा ही हुआ है। बस, आप इतना करना कि घबराना नहीं, थकना नहीं और रुकना नहीं, बल्कि जो मार्ग शिवबाबा अब दिखा रहे हैं, उस पर चलते चलना।" कभी कहते थे, "बच्चे, ये परीक्षाएँ अन्तिम सलाम करने आई हैं।" बस, ईश्वर के प्रेम को बताते हुए बाबा नित्य प्रति सबको खुशी का प्याला पिलाते थे।

पिताश्री का हृदय मानव मात्र के लिए वात्सल्य से लबालब भरा हुआ था। बड़ी-से-बड़ी गलतियों और कमज़ोरियों पर ध्यान न देकर वे हृदय का समस्त प्यार आत्माओं पर उड़ेल देते थे। लौकिक पिता के प्रेम में भी स्वार्थ की गन्ध आती है, लेकिन मानव मात्र के अलौकिक पिता 'प्रजापिता ब्रह्मा' का प्रेम पूर्णत: निस्वार्थ था। जैसे लौकिक पिता अपने पुत्र को जेल से छुड़ाने के लिए बड़े-से-बड़े कष्ट सह लेता है, उसी तरह पिताश्री एक-एक जीवात्मा को माया की कैद से छुड़ाने के लिए अपने आराम की ओर भी ध्यान न देकर निरन्तर सेवारत थे। मानव-मात्र के लिए इतना पितृ-स्नेह था पिताश्री के हृदय में!

नर से नरोत्तम... - पेज 1 का शेष

का कमाल नहीं था, ये कमाल था परमात्मा का, जिनकी प्रेरणा से ये सारे कार्य संभव हो रहे थे। परमात्मा ने ही दादा लेखराज का नाम परिवर्तित करके 'प्रजापिता ब्रह्मा' रखा। एक साधारण इंसान को पूरे जग को परिवर्तित करने वाला बना दिया। आप देखिये, वो प्रजापिता ब्रह्मा हमेशा ओम मंडली के सभी सदस्यों को यही कहते रहते कि सभी के प्रति शुभचिंतक बनकर सबके कल्याण का चिंतन करें और किसी भी परिस्थिति में किसी के प्रति वैर-भाव ना पनपने दें। आप ब्रह्मा को अविचल, अटल स्थिति में भी देख सकते हैं, क्योंकि कालांतर में जब भारत पाकिस्तान का विभाजन हुआ, उस समय ब्रह्मा बाबा और उनके साथ सभी सहयोगियों को पाकिस्तान छोड़ कर माउण्ट आबू के लिए प्रस्थान करना था। लेकिन वरिष्ठ दादियों, दीदीयों से जब उसके बारे में पूछा गया, तब उन्होंने कहा कि ऐसे समय पर भी हमारे ब्रह्मा बाबा के चेहरे पर ज़रा भी सिकन नहीं थी। इसके अलावा जब स्थानांतरण हुआ, तो भी माउण्ट आबू आने के बाद उनका बहुत धन व्यय हुआ, यहाँ पर भाई बहनों को भोजन तक की मुश्किलों का सामना करना पड़ा, तब भी प्रजापिता ब्रह्मा अचल, अटल, अडोल स्थिति में सदा रहे। कहा जाता है कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इतनी तपस्या की, कि आज भी जो कोई माउण्ट आबू के पाण्डव भवन परिसर में आता है, तो उनके प्रेम को, उनकी निष्ठा को, उनकी सत्यता को, उनके वायब्रेशन्स को फील करता है। हर एक मनुष्य उनसे निश्छल भाव महसूस करता है। ये एक नहीं, अनेकों का अनुभव है कि ब्रह्मा बाबा कोई अव्यवहारिक या किताबों की शोभा बढ़ाने वाला सिद्धान्त नहीं हैं, लेकिन एक साक्षात प्रमाण हैं इस दुनिया के मनुष्यों के लिए, जो वर्तमान परिवेश में किसी को प्रेम और शांति से जीवन जीते हुए सभी के अंदर वो धारणा भर दी, ताकि कोई ये ना कह सके, कि खुद तो करते नहीं हैं और मुझे कह रहे हैं। इसलिए ब्रह्मा 'ब्रह्मा' है, वो पहले स्वयं करता, स्वयं का जीवन दिव्य बनाता, फिर औरों का बनाता। ऐसी दिव्य विभूति, इस रुहानी सेना के सर्वश्रेष्ठ सेनापति प्रजापिता ब्रह्मा, जो अपने सहयोगियों को योग्य बनाकर 18 जनवरी 1969 को सूक्ष्मलोक निवासी बने, उनके लिए आज हम सभी का सिर श्रद्धा से झुका हुआ है। हमें लगता है, कि उनके द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलने का संकल्प सच में उनके प्रति आस्था और श्रद्धा का अर्पण होगा। हम पूरे विश्व के समस्त मनुष्यों को यही कहना चाहेंगे कि ब्रह्मा बाबा कोई साधारण इंसान नहीं थे, वे मास्टर भगवान थे। अगर कहीं कोई किसी से प्रेरणा लेने योग्य दिव्य विभूति है, तो वो हैं कर्म और उसका प्रत्यक्ष स्वरूप बनने वाले प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। ऐसी दिव्य विभूति को हम सभी की तरफ से शत् शत् नमन।

जम्मू कश्मीर। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जम्मू कश्मीर के उपमुख्यमंत्री निर्मल कुमार सिंह, भाजपा महिला कार्यकर्ता शीला हंडू, ब्र.कु. मृत्युंजय,मा.आबू, ब्र.कु. रविन्दर, ब्र.कु. निर्मल, ब्र.कु. प्रेम बहन,पंजाब तथा ब्र.कु.सुदर्शन बहन।

राजगढ़-म.प्र.। 'विश्व यादगार दिवस' पर सड़क दुर्घटना में जान गवाँने वालों के प्रति दीप जलाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए खादी ग्रामोद्योग उपाध्यक्ष रघुनंदन शर्मा, पुलिस अधीक्षक सिमाला प्रसाद, यातायात सब इंस्पेक्टर देवेन्द्र दीक्षित, समाजसेवी ओ.पी.शर्मा तथा ब्र.कु. मधु।

शाजापुर-म.प्र.। प्राचीन मंदिर के जिर्णोद्धार अवसर पर निकाली गई भव्य शोभा यात्रा रथ में विराजित कर ब्र.कु. प्रतिभा, ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु.चंदा का किया गया सम्मान।

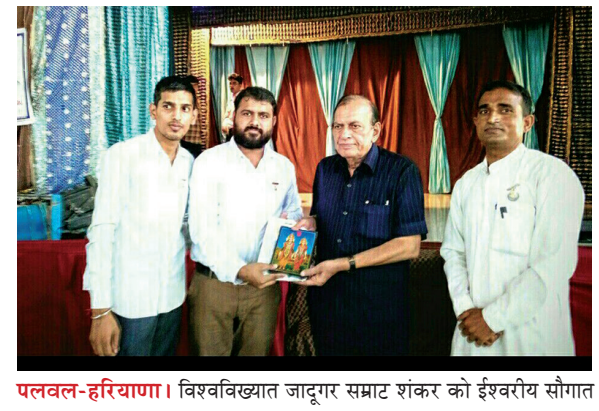

पलवल-हरियाणा। विश्वविख्यात जादूगर सम्राट शंकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुप, ब्र.कु. राजेन्दर तथा ब्र.कु. विक्की।

संगमनेर-महा.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में एस.एस.टी. आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के प्रिन्सीपल विरेन्द्र शाह, रजिस्ट्रार सतीश घुले व अन्य डॉक्टर्स के साथ ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. पदमा तथा डॉ. यागिनी।

मनावर-म.प्र.। शासकीय हायर सेकेण्डरी स्कूल में बच्चों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुंदरी। साथ हैं ब्र.कु. नारायण तथा अन्य।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित 'मानवीय मूल्य एवं विश्व शांति' कार्यक्रम में मंचासीन हैं केन्द्रीय मंत्री अनन्त गीते, म.प्र. शिवसेना अध्यक्ष ठाड़ेश्वर महावर, ब्र.कु.विमला तथा अन्य।

विक्रमगंज-विहार। केन्द्रीय राज्य मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।

नवी मुंबई-पनवेल। आदर्श ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट के चेयरमैन धनराज विसपुते को उनके जन्म दिन के अवसर पर बधाई देने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु.तारा। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील।

कादमा-हरि.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में प्रो.धनसिंह चौधरी, सरपंच दलवीर सिंह गांधी, पूर्व प्राचार्या सरला चौधरी, ब्र.कु.उर्मिला, ब्र.कु.वसुधा, समाज सेवी श्याम लाल गर्ग, मा. दरिया सिंह तथा अन्य।

मुंदरा-कच्छ(गुज.)। 'संगीतमय स्वास्थ्य शिविर' में शिवध्वज लहराते हुए योगाचार्य ब्र.कु.संजीव, ब्र.कु.धरती, ब्र.कु.सुशीला, ब्र.कु.वर्षा, ब्र.कु.हेतल, ब्र.कु. निशा, शुभम शिपिंग के सी.ई.ओ. सुरेश भाई ठक्कर, शक्ति भाई तथा वसंत भाई।

सोनगढ़-गुज.। पीस मैसेन्जर बस के आगमन पर स्वागत करते हुए पी.एस.आई. यशवंत भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

जैसी प्रकृति अंदर, वैसी प्रकृति बाहर

- गतांक से आगे...

मनुष्य की प्रकृति कैसे निर्मित होती है? जिस प्रकार का व्यक्ति भोजन करता है। सात्विक भोजन करता है तो उससे सात्विक प्रकृति का देह तैयार होता है। राजसिक भोजन करते हैं तो उससे राजसिक प्रकृति का देह तैयार होता है और जब तामसिक भोजन खाते हैं तो तामसिक प्रकृति का देह तैयार होता है। अगर हम तामसिक भोजन करने के बाद इच्छा करें कि हमें सात्विक गुण का बच्चा मिले, ये कभी हो सकता है! जैसा आपने खाया है, जैसी प्रकृति आपने अंदर डाली है, उसी प्रकृति से तो वो शरीर तैयार होने वाला है।

फिर वो बच्चा आपको दु:ख देता है। अब तामसिक प्रवृत्ति वाला बच्चा दु:ख ही देगा ना। इसलिए जिस प्रकार का शरीर हमें तैयार करना होता है, वह हमारे ऊपर है। तब कहा कि प्रकृति से उत्पन्न होने वाले सतो, रजो और तमो, ये तीन गुण अविनाशी देही को देह से बांधते हैं। सतो गुण किसको कहते हैं? निर्मल माना पवित्र। बुद्धि को प्रकाश प्रदान करने वाला। निर्विकारी होने के कारण वह व्यक्ति को सुख और ज्ञान के सम्बन्ध में ले आता है, बांधता है। वो ज्ञानी बन जाता है।

रजो गुण वाले व्यक्ति को कामना और आसक्ति से उत्पन्न जानो। वह आत्मा को कर्म के बंधन में बांधता है और तमो गुण अज्ञान से उत्पन्न होता है जो आत्मा को आलस्य, निद्रा और प्रमाद में बांधता है। इस प्रकार से जैसी प्रकृति वैसे ही आत्मा के अंदर लक्षण भी आते हैं। इसलिए आज दुनिया के अंदर भी, और आगे के गीता के अध्यायों में हम देखेंगे कि सात्विक भोजन एवं राजसिक भोजन किसको कहा जाता है और तामसिक भोजन किसको। इसलिए तो कहा जाता है कि जैसा अन्न वैसा मन। जिस प्रकार के भोजन को हम

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

स्वीकार करते हैं, वैसी हमारे शरीर की प्रकृति तैयार होती है। तमोगुण की बुद्धि से अज्ञानता, आलस्य, अलबेलापन, प्रमाद और मोह की अभिव्यक्ति होती है। जिस कारण तमोगुणी मनुष्य अधोगति को प्राप्त होते हैं और पुन: जन्म भी पशु समान होता है। पशु योनि में नहीं जाता है। मनुष्य योनि में रहकर के ही पशु समान उसका जीवन बन जाता है अर्थात् नर्क समान उसका जीवन बन जाता है। किस प्रकार की विचारधारा, किस प्रकार का भोजन आवश्यक है?

जब रजोगुण में वृद्धि होती है तो अत्यधिक आसक्ति, स्वार्थ युक्त कर्म का प्रारंभ होता है। अशांति एवं इच्छाओं का उदय होता है। रजोगुणी कर्म के फल से दु:ख की अनुभूति होती है एवं रजोगुण की वृद्धि काल में मृत्यु को प्राप्त करने वाला, कर्म बंधन होने के कारण पुन: जन्म में भी, जीवन बंध का अनुभव करता है। तमो गुण वाला पशु समान जीवन, नर्क समान जीवन और रजोगुण वाला, जीवन बंधन में महसूस करता है। जैसे हर क्षण कोई न कोई प्रकार का बंधन उसको बांधे हुए है ऐसा अनुभव करता है।

- क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

"

जीवन 'बाँसुरी' की तरह है,
जिसमें बाधाओं रुपी कितने भी
छेद क्यों न हों...,
लेकिन जिसको उसे
बजाना आ गया,
उसे जीवन जीना आ गया..।

"

अज्ञानी व्यक्ति गलती छिपाकर
बड़ा बनना चाहता है,
और
ज्ञानी व्यक्ति गलती मिटाकर
बड़ा बनना चाहता है।

"

'प्रेम और पसंद' दोनों में
क्या अंतर है?
इसका सबसे सुन्दर जवाब गौतम
बुद्ध ने दिया है : अगर तुम एक फूल
को पसंद करते हो तो तुम उसे तोड़कर
रखना चाहोगे ..,
लेकिन अगर उस फूल से प्रेम करते हो
तो तोड़ने के बजाय तुम रोज़ उसमें पानी
डालोगे ताकि फूल मुरझाने न पाए..।
जिसने भी इस रहस्य को समझ लिया
समझो उसने पूरी ज़िंदगी को ही समझ
लिया।

"

गुरबानी कहती है.......
'सो मन अपना सो मन तैसा'
अर्थात् ::
अपने मन की जो स्थिति
होती है, हमें वैसी ही दुनिया
नज़र आती है।
एक इंसान जिसका मन
अवगुणों से भरा हुआ हो,
तो उसे सबमें अवगुण ही
नज़र आते हैं।
मगर गुणों से भरे इंसान को
सबमें गुण ही गुण
नज़र आते हैं।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए
सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।
विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

कथा सरिता

एक एकता ऐसी भी

एक प्राचीन मंदिर की छत पर कुछ कबूतर राजीखुशी रहते थे। एक दिन वार्षिकोत्सव की तैयारी के लिये मंदिर का जीर्णोद्धार होने लगा, तब कबूतरों को मंदिर छोड़कर पास के चर्च में जाना पड़ा।

चर्च के ऊपर रहने वाले कबूतर भी नये कबूतरों के साथ राजीखुशी रहने लगे। क्रिसमस नज़दीक था तो चर्च का भी रंगरोगन शुरू हो गया। अत: सभी कबूतरों को जाना पड़ा नये ठिकाने की तलाश में।

किस्मत से पास के एक मस्जिद में उन्हें जगह मिल गयी और मस्जिद में रहने वाले कबूतरों ने उनका खुशी-खुशी स्वागत किया।

रमज़ान का समय था, मस्जिद की साफ-सफाई भी शुरू हो गयी, तो सभी कबूतर वापस उसी प्राचीन मंदिर की छत पर आ गये।

एक दिन मंदिर की छत पर बैठे कबूतरों ने देखा कि नीचे चौक में धार्मिक उन्माद एवं दंगे हो गये।

छोटे से कबूतर ने अपनी माँ से पूछा: 'माँ ये कौन लोग हैं?'

माँ ने कहा: 'ये मनुष्य हैं।' छोटे कबूतर ने पूछा: 'माँ, ये लोग आपस में लड़ क्यों रहे हैं?'

माँ ने कहा: 'जो मनुष्य मंदिर जाते हैं वो हिन्दू कहलाते हैं, चर्च जाने वाले ईसाई और मस्जिद जाने वाले मनुष्य मुस्लिम कहलाते हैं।'

छोटा कबूतर बोला: 'माँ एसा क्यों? जब हम मंदिर में थे तब हम कबूतर कहलाते थे, चर्च में गये तब भी कबूतर कहलाते थे और जब मस्जिद में गये तब भी कबूतर कहलाते थे, इसी तरह यह लोग भी मनुष्य कहलाने चाहिये चाहे कहीं भी जायें।' माँ बोली: 'मैंने, तुमने और हमारे साथी कबूतरों ने उस एक ईश्वरीय सत्ता का अनुभव किया है, इसलिये हम इतनी ऊंचाई पर शांतिपूर्वक रहते हैं। इन लोगों को उस एक ईश्वरीय सत्ता का अनुभव होना बाकी है, इसलिये यह लोग हमसे नीचे रहते हैं और आपस में दंगे फसाद करते हैं।'

बात छोटी सी है, पर मनन करने योग्य है। परमात्मा ने मनुष्यों के लिए एक ही सृष्टि की रचना की, एक ही धरती-आकाश, एक ही प्रकृति, सूर्य-चाँद की रोशनी सबको बराबर दी, एक जैसा शरीर दिया, फिर ये झूठे धर्म के नाम पर भेदभाव क्यों...!

वो क्षण ही आपका है

एक आदमी मर गया। जब उसे महसूस हुआ तो उसने देखा कि भगवान उसके पास आ रहे हैं और उनके हाथ में एक सूटकेस है।

भगवान ने कहा: 'पुत्र चलो, अब समय हो गया।' आश्चर्यचकित होकर आदमी ने जबाव दिया: 'अभी इतनी जल्दी? अभी तो मुझे बहुत काम करने हैं। मैं क्षमा चाहता हूँ, किन्तु अभी चलने का समय नहीं है। आपके सूटकेस में क्या है?'

भगवान ने कहा: 'तुम्हारा सामान।'

'मेरा सामान! आपका मतलब है कि मेरी वस्तुएं, मेरे कपड़े, मेरा धन?' आदमी ने पूछा।

भगवान ने प्रत्युत्तर में कहा: 'ये वस्तुएं तुम्हारी नहीं हैं। ये तो पृथ्वी से सम्बंधित हैं।'

आदमी ने पूछा: 'मेरी यादें? भगवान ने जवाब दिया: 'वे तो कभी भी तुम्हारी नहीं थीं। वे तो समय की थीं।'

'फिर तो ये मेरी बुद्धिमता होगी?' भगवान ने फिर कहा: 'वह तो तुम्हारी कभी भी नहीं थी, वो तो परिस्थिति जन्य थी।'

'तो ये मेरा परिवार और मेरे मित्र हैं?' भगवान ने जबाव दिया: 'क्षमा करो, वे तो कभी भी तुम्हारे नहीं थे। वे तो राह में मिलने वाले पथिक थे।'

'फिर तो निश्चित ही यह मेरा शरीर होगा?'

भगवान ने मुस्कुरा कर कहा: 'वह तो कभी भी तुम्हारा नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो राख है।'

'तो क्या यह मेरी आत्मा है?' 'नहीं वह तो मेरी है।' - भगवान ने कहा।

भयभीत होकर आदमी ने भगवान के हाथ से सूटकेस ले लिया और उसे खोल दिया यह देखने के लिए कि सूटकेस में क्या है। वह सूटकेस खाली था। आदमी की आँखों में आँसू आ गए और उसने आश्चर्य से कहा: 'मेरे पास कभी भी कुछ नहीं था!

भगवान ने जवाब दिया: 'यही सत्य है। प्रत्येक क्षण जो तुमने जिया, वही तुम्हारा था।'

ज़िन्दगी क्षणिक है और वो ही क्षण आपका है। इस कारण जो भी समय आपके पास है, उसे भरपूर जियें। आज में जियें। खुश होना कभी न भूलें। यही एक बात महत्व रखती है। भौतिक वस्तुएं और जिस भी चीज़ के लिए आप यहाँ लड़ते हैं, मेहनत करते हैं...आप यहाँ से कुछ भी नहीं ले जा सकते हैं।

ये समय फिर लौटकर नहीं आयेगा...

एक फ़कीर बहुत देर से नदी के किनारे बैठा था। किसी ने उनसे पूछा: 'बाबा! क्या कर रहे हो?'

फ़कीर ने कहा : 'इंतज़ार कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाए, तो फिर पार करूँ।'

उस व्यक्ति ने कहा : 'कैसी बात करते हो बाबा, पूरा जल बहने के इंतज़ार में तो तुम कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगे...!'

फ़कीर ने कहा : 'यही तो मैं तुम लोगों को समझाना चाहता हूँ, कि तुम लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की ज़िम्मेदारियाँ पूरी हो जायें तो मौज करूँ, घूमूँ फिरूँ, सबसे मिलूँ, समाज सेवा करूँ...।

तो जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा, हमको ही इस जल से पार जाने का रास्ता बनाना है, उसी तरह ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने के इंतज़ार में उम्र समाप्त हो जायेगी, जीवन खत्म हो जायेगा, पर ये ज़िम्मेदारियाँ और काम कभी खत्म नहीं होंगे।

इस जीवन में रहते हमें अपनी ज़िम्मेदारियाँ तो निभानी ही हैं, परंतु हमें जब भी अवसर मिले तो वो कार्य हमें अवश्य कर लेना है, जिससे हमें सच्ची सुख शांति की प्राप्ति हो और हमारा और सबका कल्याण हो। क्योंकि ये समय फिर लौटकर नहीं आयेगा।

भुवनेश्वर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् दलाई लामा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी, ब्र.कु. राजेश, ब्र.कु. नंदा, ब्र.कु. विजय व अन्य।

मुज़फ्फरपुर-बिहार। आम्रपाली ऑडीटोरियम में 'किसान सशक्तिकरण अभियान' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कृषि राज्यमंत्री डॉ. प्रेम कुमार, ग्रामीण विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला, उपाध्यक्ष ब्र.कु.राजू,मा.आबू, ब्र.कु. रानी, सांसद रमा देवी, विधायक बेबी कुमारी, संयुक्त कृषि निदेशक सुरेंद्र नाथ, ब्र.कु.अंजु , ब्र.कु. अनिता व अन्य।

सुंदरबनी-जम्मू कश्मीर। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाने के पश्चात् महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी महाराज को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी। साथ हैं ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. इच्छा, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। विश्व यादगार दिवस पर सड़क दुर्घटना में पीड़ितों की स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात् समूह चित्र में औद्योगिक थाना क्षेत्र के टी.आई. राजेश चौहान, जिला ट्रांसपोर्ट सचिव कमलेश मोदी, ब्र.कु.सविता तथा अन्य।

अलीराजपुर-म.प्र.। 'सर्व धर्म सद्भावना सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुस्लिम धर्म के इर्शाद अहमद कुरैशी, गायत्री परिवार के संतोष भाई, बोहरा धर्म के जाकिर भाई, हिन्दु धर्म के गोविन्द शास्त्री, स्वामी जय केशव जी, ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. माधुरी तथा ब्र.कु.निर्मला।

भरतपुर-राज.। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.पी. अनिल कुमार टोंक, ओमप्रकाश शर्मा,पूर्व प्राचार्य,आर.डी. गर्ल्स कॉलेज, श्रीमति मिनाक्षी गुप्ता,स्त्री रोग विशेषज्ञ, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. बबिता तथा अन्य।

हमारे अनुभव से ब्रह्मा बाबा

शक्तिशाली पालना, अविचल स्नेह और दिल को हमेशा के लिए पुलकित करने वाला भाव, दृश्य, अदृश्य शक्तियों का सम्पूर्ण समावेश और उसका जीवंत अनुभव परमात्मा की परछाई और उस परछाई में सम्पूर्ण अलौकिकता का अनुपम, अवर्णनीय, अकल्पनीय मिसाल अगर कोई है, तो वो हैं हमारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। उनके जीवन परिवर्तन का अनुभव हम अपने जीवन परिवर्तन से तुलना करके देखेंगे आज.....

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

दुनिया में जब किसी व्यक्ति के बारे में बात होती है, तो सबके मुख से निकलता है, अच्छा! वो कैसे थे, कैसे चलते थे, कैसे बोलते थे, कैसे कपड़े पहनते थे, कैसे उठते थे, कैसे बैठते थे, अर्थात् सब किसी के भी चरित्रों का वर्णन करते, ना कि चित्र का। लेकिन यह अलौकिक मानव जो कि इस सृष्टि का आदि पिता है, उनका चित्र और चरित्र दोनों अविश्वसनीय है। कहा जाता है कि स्मृति शरीर की नहीं होती, लेकिन चरित्र के विशेषताओं की होती है। ब्रह्मा की सबसे पहली विशेषता यही थी कि उन्होंने पहले स्वयं के शरीर की स्मृति नष्ट की, उसके बाद औरों की। एक बहुत सुंदर कहावत है कि 'सफलता की पोशाक कभी तैयार नहीं मिलती, इसे बनाने के लिए मेहनत का हुनर चाहिए।' इसी का सम्पूर्ण उदाहरण हमारे ब्रह्मा बाबा हैं, जिन्होंने लगभग 37 साल तक इस देह रूपी पोशाक को उतारने का अभ्यास किया, ताकि सब लोग उनसे उस स्मृति से ना मिलें जो किसी को देखकर होता है। जैसे मनुष्य जीवन में आप किसी को याद करते हैं, तो सामने देह आती है, देह के सम्बन्ध के कारण दु:ख महसूस होता है या सुख महसूस होता है। लेकिन जब ब्रह्मा बाबा की स्मृति हम सबको आती है, तो हमें वो स्मृति और ज़्यादा शक्तिशाली बना देती है। परमात्मा ने ब्रह्मा बाबा की विशेषताओं को इतने सुंदर तरीके से हम सबके सामने रखा कि आज हम उसको पढ़कर भी उनको साकार रूप में अपने सामने देख सकते हैं। ब्रह्मा पिता के हर कदम में विशेषताएं थीं, संकल्प में भी सर्व को विशेष बनाने का उमंग उत्साह था। वृत्ति द्वारा हर आत्मा को उमंग उत्साह में लाना, वाणी द्वारा सदा हिम्मत दिलाना, ना-उम्मीद को उम्मीद में ला देना, निर्बल आत्मा को सबल बना देना, हर बोल जिनका अनमोल था, मधुर था, युक्तियुक्त था, ऐसे बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया। उनका पहला स्लोगन था, जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। बाल से बाल रूप में मिले, युवा से युवा रूप में मिले और बुज़ूर्ग से बुज़ूर्ग रूप बन सदा आगे बढ़ाया। उन्हें वैसा ही अनुभव कराया जैसा वे करना चाहते थे। उनसे जो भी मिला है, आज भी उनसे उनका अनुभव पूछो तो वो यही कहते हैं कि बाबा मुझे बहुत प्यार करते थे। सभी समझते थे कि बाबा सिर्फ मेरा है। यह थी बाबा के सम्पर्क सम्बन्ध की सबसे बड़ी विशेषता। बाबा सर्व के प्रति शुभचिंतक रहते थे।

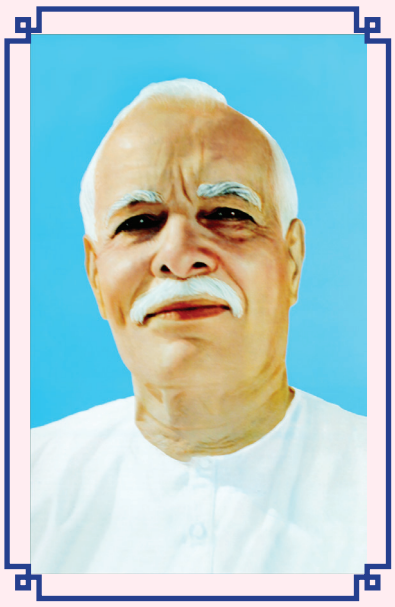

ब्रह्मा, ब्रह्मा कैसे बने, अगर इसको कुछ शब्दों में समेटा जाये, तो वो था पहला कदम हिम्मत का, जिसने उन्हें पदमापदम भाग्यवान अनुभव कराया, वो था सब बातों में समर्पणता। सबकुछ समर्पण कर दिया, कुछ नहीं सोचा क्या होगा कैसे होगा। एक सेकेण्ड में तन को समर्पित किया, मन को समर्पित किया, धन को भी समर्पित किया, बिना ये सोचे कि आगे क्या होगा! ऐसे ही सम्बन्ध को भी समर्पण किया, लौकिक को अलौकिक सम्बन्ध में बदला, उन्हें छोड़ा नहीं, उनका भी कल्याण किया, परिवर्तन किया। मैं-पन की बुद्धि, अभिमान की बुद्धि, पद-प्रतिष्ठा की बुद्धि, सबकुछ परमात्मा के आगे समर्पित कर निखालस बन गये। इसीलिए शायद उनके तन से, मन से, बुद्धि से सबको शीतलता का अनुभव होता रहा, क्योंकि वो किसी के नहीं, सभी के हो गये और इस दुनिया में भी लोग उसी को सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं जो सभी का है, डिटैच है, अलग है, अनोखा है। तो ऐसे प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हम बच्चे जो इस ब्रह्माकुमारी संस्थान को सबके सामने रीप्रेज़ेंट करते हैं, हमें भी इस स्मृति दिवस पर उनके समान बनने का दृढ़ संकल्प लेकर स्नेह और प्यार का रिटर्न देना है। बाप समान बनना है, वही सच्ची श्रद्धांजलि होगी, जो हमें औरों के लिए प्रेरणास्रोत बनायेगी।

सामने

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

मुम्बई-घाटकोपर-I बाल दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागी बच्चों को सर्टीफिकेट व ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. नलिनी दीदी।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: शंकर का बड़ा ही विलक्षण स्वरूप दिखाया है, देह पर सर्प, राख लपेटे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा व सिर से बहती गंगा, हाथ में डमरू व साथ में त्रिशूल। कुछ अटपटा सा लगता है। क्या शंकर ऐसे हैं?

उत्तर: वास्तव में शंकर का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। वे यादगार हैं, वे प्रतीक मात्र हैं उन महान तपस्वियों के, जिन्होंने ज्ञानेश्वर व योगेश्वर शिव के द्वारा सिखाये गये राजयोग की साधना की। उनकी देह पर विभिन्न वस्तुओं का दिखाया जाना आध्यात्मिक मर्म लिए हुए है। ध्यान दें - जिन्होंने विकारों रूपी विषधरों को अपने गले की माला बना लिया अर्थात् विकारों को वश कर लिया, जिनका चित्त चन्द्र की तरह शीतल हो गया, जिनकी बुद्धि से निरंतर ज्ञान की गंगा बहती रही अर्थात् जो ज्ञान स्वरूप हो गये, वे ही महान तपस्वी बने। इसलिए ग्यारह रूद्रों का गायन है, वे निरंतर अशरीरी बन गये, इसलिए उन्हें नग्न दिखाते हैं, वे ज्ञान डांस करने लगे, अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगे, तीनों कालों व तीनों लोकों के ज्ञाता बन गये, इसलिए उन्हें डमरू व त्रिशूल दिया है। तो, ये ब्रह्मा-वत्सों की बाप समान स्थिति का प्रतीक है।

प्रश्न: मैं एक डायरेक्ट प्रश्न आपसे पूछता हूँ - क्या आपने भगवान को देखा है?

उत्तर: हम भी डायरेक्ट उत्तर दे रहे हैं..हाँ...एक बार नहीं बार-बार और उनसे ऐसा दिव्य नेत्र भी प्राप्त कर लिया है कि जब चाहें उन्हें देख लें और केवल देखा ही नहीं बल्कि उनसे नाता भी जुड़ गया। हम अति समीप हो गये, वो हमारा हो गया। वो हमारा परम मित्र बन गया। यदि आप चाहें तो हम आपका भी उनसे दिव्य मिलन करा सकते हैं।

प्रश्न: आप लोग सन्त-महात्माओं का सम्मेलन रखते हो। परन्तु ये तो कभी आपस में मिलते नहीं। इन सबकी विचारधाराएं अलग-अलग हैं, इनसे आप क्या अपेक्षाएं रख सकते हैं? वे संसार को कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हैं।

उत्तर: नहीं बन्धु...जो सन्त हैं वे अवश्य ही सांसारिक लोगों से श्रेष्ठ हैं। यह हो सकता है कि वे आपकी अपेक्षाओं पर खरे न उतरते हों परन्तु हैं तो वे महान ही। जिन्होंने थोड़ी भी पवित्रता अपनाई हो वे महान हैं। फिर उनका त्याग भी तो है। विचारों में मतभेद हो सकता है, परन्तु हमें उन्हें ईश्वरीय संदेश भी देना होता है। हमारा लक्ष्य ये भी है कि जिस लक्ष्य हेतु उन्होंने त्याग किया है उस परमात्म-मिलन की विधि वे परमात्म-ज्ञान द्वारा प्राप्त कर सकें। साथ-साथ इस महान ईश्वरीय कार्य में वे हमारे सहयोगी भी हैं व बन भी जाते हैं। हमें किसी की भी कमी नहीं देखना है, हमें तो उन्हें और ही समीप लाना है।

प्रश्न: आपके पास इतने सन्त आये, उनमें से कितनों ने भगवान को पहचाना...? मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कुछ हुआ है, क्योंकि इन विद्वानों में अहम् बहुत होता है।

उत्तर: आबू पावन तीर्थ एक ऐसी दिव्य भूमि है जहां आकर सभी का अहम् समाप्त हो जाता है। हमें एक भी संत से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि उनमें अहम् है। यहां हमने सभी को दिव्य व सौम्य स्वरूप में ही देखा। यहां उनके चेहरों पर शान्ति थी, प्रेम था, अपनत्व का भाव था व आनंद था। उनके कानों में ये महावाक्य पड़े कि ये ईश्वरीय कार्य मनुष्यों द्वारा संचालित नहीं है। उन्होंने सुना कि ब्रह्मा बाबा के तन में स्वयं निराकार, ज्ञान सागर, महाज्योति परमसत्ता, परम आत्मा ने प्रवेश करके ज्ञान दिया था। वही ज्ञान यहां दिया जा रहा है। यह जानकर कि अब भी उनका अवतरण होता है, उनमें से कइयों ने उनका प्रत्यक्ष स्वरूप देखने की सच्चे दिल से इच्छा व्यक्त की।

प्रश्न: बाबा को मिलने के बाद मेरे जीवन में सुख-शांति आ गई। मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। परंतु मेरे परिवार में अभी भी अशांति बनी रहती है, कोई न कोई विघ्न आते ही रहते हैं। मैं इनसे मुक्ति का उपाय जानना चाहता हूँ?

उत्तर: आप यदि अमृतवेले उठकर बहुत पावरफुल योग करेंगे तो आपके घर के अनेक विघ्न हट जायेंगे। घर को निर्विघ्न व सुख-शांति सम्पन्न बनाने के लिए घर के वायब्रेशन्स को खुशी व प्रेम से भरना आवश्यक है। जिस परिवार में खुशी व प्रेम होगा, वहां आपदाएं विपदाएं ठहरेंगी ही नहीं। खुशी के लिए एक ही बात करें कि किसी भी छोटी बात को तूल न दें। हर बात को हल्का करके जल्दी से जल्दी समाप्त किया करें। कुछ लोगों को आदत होती है बातों को लम्बा खींचने की, वे बातों को समाप्त करते ही नहीं। इससे सबकी खुशी नष्ट होती है। आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए सभी को इस नज़र से देखो कि ये सब आत्माएं देवकुल की महान् आत्माएं हैं।

घर निर्विघ्न रहे इसके लिए अपने घर में, दुकान में या ऑफिस में 5 बार बाप-दादा का आह्वान करें और यह फील करें कि बाप-दादा आपके घर में आ गये और उनके अंग-अंग से चारो ओर किरणें फैल रही हैं।

तीसरी बात - घर में तीन बार दस-दस मिनट बैठकर इस तरह से योग करो कि मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ और ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं, फिर वो पूरे घर में फैल रही है। ऐसा करना नियम बना लो तो विनाशकाल में भी सुखद अनुभव होंगे।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

50 कीर्तिमान करने वाले पहले भारतीय बने डॉ. दीपक हरके

अहमदनगर-महा.। अलग-अलग प्रकार के 50 विश्व कीर्तिमान स्थापित करने वाले प्रथम भारतीय होने का बहुमान अहमदनगर के प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ध्यानधारणा विशेषज्ञ डॉ. दीपक हरके ने प्राप्त किया है। लंदन की वंडर बुक ऑफ इंटरनेशनल रिकॉर्ड्स संस्था ने डॉ. हरके को इससे सम्बंधित प्रमाणपत्र भेजा है। राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने यह प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए डॉ. दीपक हरके को सम्मानित किया।

इस सफलता के बारे में जानकारी देते हुए डॉ. हरके ने बताया कि केवल नियमित ध्यान धारणा के अभ्यास के कारण ही यह सफलता हासिल करना संभव हो सका है। डॉ. दीपक हरके ने यूथ विंग को साथ लेकर 26.11.2010 को विश्व की सबसे बड़ी रंगोली निर्माण कर विश्वक्रम किया। नगर शहर के भाऊसाहेब फिरोदिया हायस्कूल के मैदान पर 97176 स्क्वायर फीट आकार की रंगोली का विक्रम आज भी गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में कायम है।

उनके 50 विश्व कीर्तिमान में 1 लाख लोगों को एक साथ ध्यानधारणा, विश्व का सबसे छोटा कमल, विश्व की सबसे

छोटी राखी, राजयोगिनी दादी जानकीजी के 100वें जन्मदिन पर 'विश्व की सबसे बड़ी ट्रॉफी' द्वारा शुभकामना, राजयोगिनी दादी जानकीजी के 102वें जन्मदिन पर '100 अलग-अलग प्रकार के फूलों की माला' द्वारा शुभकामना आदि विश्व कीर्तिमान शामिल हैं।

श्रद्धा सुमन अर्पित

जगदीश प्रसाद अग्रवाल, जो 1965 में ईश्वरीय यज्ञ से जुड़े। वे 16 नवम्बर 2017 को अपना पुराना देह त्यागकर अव्यक्त हुए।

वे कलकत्ता में 'सिल्वर स्ट्रॉक' बनियान कम्पनी के मालिक थे। वे जब से ईश्वरीय सेवाओं से जुड़े, तब से उन्होंने वारिस बनकर इस यज्ञ में अथक सेवाएँ दीं। जयपुर के मदनलाल शर्मा जो आरंभ से ही उनके साथ पढ़ाई, व्यवसाय और ईश्वरीय सेवाओं में भी साथी रहे। वे बताते हैं कि उन्होंने एक साथ ही बाबा को पहचाना और दिल से बाबा पर समर्पित हो गए। एक माह में ही साकार बाबा से दोनों मिले। अनेकों बार अव्यक्त बापदादा से मिले। सभी दीदी दादियों से बेहद स्नेह व सभी का बेहद स्नेह दोनों आत्माओं ने सदा प्राप्त किया। वे बाबा, दादियों व वरिष्ठ भाइयों के सदा बहुत नज़दीक रहे। दोनों आत्माओं ने बाबा के अनेक स्थानों के निर्माण हेतु तन, मन, धन से सदा सहयोग दिया और आज भी देते हैं।

पिछले 20 वर्षों से बीमार होने के कारण जगदीश भाई जी कहीं आ-जा न सके, परन्तु अन्तिम श्वास तक भी वही नशा, वही प्यार, और दिल से सदा बाबा-बाबा और बाबा ही कहते रहे। जो भी उन्हें देखते तो कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय दिखाई देती थी।

दोनों ही भाग्यशाली आत्मायें हैं। जब भी ये दोनों साथी साकार बाबा से मिलते थे तो बाबा कहते कि यह तो मेरे कल्प पहले वाले वारिस बच्चे हैं। वर्तमान समय भी जयपुर में एक भव्य भवन निर्माण, बाबा का स्थान बनाने में भी वह आत्मा सम्पूर्ण सहयोगी रही।

ऐसे बाबा के वारिस व यज्ञ स्नेही बच्चे को सर्व ब्रह्मावत्सों की ओर से स्नेह सुमन अर्पित।

जीवन है, बस लुटाना ही लुटाना...

- ब्र.कु. श्याम

जीवन का अंतर्ज्ञान प्राप्त करना हम सभी मनुष्य का लक्ष्य है। जीवन को जानने के प्रति होने वाली जिज्ञासा से ही वास्तविक धर्म का जन्म होता है। धर्म का प्रारंभ किसी पुस्तक से नहीं, वरन जीवन से है। जीवन से ही धर्म का शुभारंभ होना चाहिए और धर्म के मार्ग से गुज़रने के बाद हमारे अनुभव, हमारे परिणाम जो सम्पादित हों, वे ही जीवन के अनुभव और जीवन की किताब बन जाये। पुस्तकीय ज्ञान केवल बुद्धि और मस्तिष्क का विकास करता है। इससे जीवन में वह फूल नहीं खिलेगा, जिसकी सुवास से वातावरण सुर्भित होता है, पर्यावरण प्रफुल्लित होता है, जीवन कुसुमित और आनंदित होता है।

सामान्यत: मनुष्य मन और बुद्धि से जीता है। मन से जीना तनाव को जन्म देना है और बुद्धि से जीना पांडित्य में वृद्धि करना है, पुस्तकीय ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। जीवन का आनंद और उत्सव ना तो मन में है और ना बुद्धि में है। हमने बड़े-बड़े विद्वानों को बुद्धू बनते देखा है, और बुद्धू से दिखाई देने वाले कभी-कभी अति बुद्धिमानी की बात कर जाते हैं। आपको आनंद और उत्सव का आस्वादन करना है। तो हम आपके भीतर के अज्ञात सागर की बात करना चाहते हैं।

वह अज्ञात सागर मनुष्य के मस्तिष्क के ठीक मध्य बिन्दु पर है। मन और बुद्धि तो परिधि पर है। जैसे कि नाभि भी परिधि पर है। सागर का केन्द्र है मनुष्य का हृदय। हृदय जब नीचे की ओर बहता है तो वो विकार का रूप ले लेता है। यह एक परिधि है। हृदय जब ऊपर बढ़ता है तो बुद्धि में होता है, यह है दूसरी परिधि। हमारे लिए प्रज्ञा परिधि और हृदय मूल केन्द्र है। जब व्यक्ति हृदय से जीता है तो महसूस होता है कि उसके सिर तो है ही नहीं। हम यही चाहते हैं कि व्यक्ति सिर

विहीन होकर हार्दिक हो जाये, बुद्धि से आप दूसरों के प्रश्नों का समाधान कर सकते हैं, लेकिन हृदयवान होने पर सारे सवाल ही तिरोहित हो जायेंगे। आपके पास प्रश्न ही नहीं होंगे, बल्कि आप स्वयं ही एक समाधान हो जायेंगे, उत्तरों के उत्तर, जवाबों के जवाब। प्रज्ञा के द्वारा मन को जीतेंगे, प्रज्ञा से प्रश्नों का उत्तर देंगे और तर्क को काटेंगे, परंतु हृदय से अन्यों को और करीब लायेंगे। हृदय से एक सेतु बनायेंगे, हृदय से संवेदनशीलता का निर्माण करेंगे, जिसकी आज के ज़माने में मृत्यु हो चुकी है।

अगर हृदय के द्वार नहीं खुलेंगे, तो जीवन अंधकारमय..., फिर चाहे मन कितना ही मौन क्यों ना हो, या बुद्धि अपनी पूरी गहराई पर हो। हृदय में उतरे बिना जीवन में सरसता नहीं आयेगी।

मन और बुद्धि से जीने वाले के लिए हृदय विभाव दशा है, और हमारे लिए स्वभाव दशा है। हार्दिक व्यक्ति अपनी ओर से हर समय, हर क्षण प्रेम बरसाता है, जबकि प्रज्ञा मनीषियों की दृष्टि से ये प्रेम राग है, दु:ख है, विभाव दशा है। आपके जीवन में सरसता होनी चाहिए। जब आप नितांत एकांत के क्षणों में हो और हृदय में स्नेह की रसधार न हो, तो जीवन की सार्थकता ही क्या! जीवन में रस न हो, प्रेम का झरना न हो, हृदय का उत्सव न हो, आनंद का उत्सव न हो, तो जीवन में क्या पाया!

हृदय के पास अपनी आँख है। ऐसी आँख जो सारे संसार को देख सके। संसार से टूट तो सभी सकते हैं, पर जुड़ हर कोई नहीं सकता। आप एक संकुचित दायरे से तो स्वयं को जोड़ सकते हो, लेकिन कहा जाए कि सम्पूर्ण अस्तित्व को स्वयं में समाविष्ट कर लो, तो यह कठिन कार्य होगा। प्रार्थणाएं ज़रूर विश्व कल्याण की कर लेते हो, लेकिन कल्याण न तो कोई करता है, ना कोई चाहता है।

आप अपने बेटे को जिस समय सौ रुपये दे रहे हैं, उसी क्षण कोई ज़रूरतमंद पहुँच जाये तो उसकी उपेक्षा कर बैठेंगे, उसे लौटा देंगे। हमारे हृदय में सभी के लिए प्रेम नहीं है, एक सीमा तक ही प्रेम विस्तीर्ण होता है। आपका प्रेम हृदय से उत्पन्न नहीं हुआ है, आपका प्रेम ध्यान से निस्पन्न नहीं हुआ है। जब प्रेम हृदय और ध्यान से आयेगा, तो वह कुछ पाना नहीं चाहेगा, सदा देने को तत्पर होगा। जिस क्षण प्रेम लुटाया जाता है, एक नये धर्म का उद्भव होता है, जिसे हम करुणा कहते हैं। जब तक लुटने का भाव न आये, लुट जाने की आकांक्षा न हो, तब तक करुणा प्रेम रहता है, यही प्रेम जब पाने की इच्छा करने लगता है, तो मन का विकार हो जाता है।

हम यहाँ मन को साधने की बात नहीं करते, मन को तो विसर्जित करना है, हृदय से जीना है। हृदय से जीकर ही जीवन का आनंद लिया जा सकता है। हृदय ही आनंद का द्वार है। हृदय में एकाग्र होते ही आनंद का विस्फोट होता है। हृदय में रहकर हर क्षण आनंद में रह सकते हो। हृदय की आँखों से केवल इंसान में प्रभु की मूरत दिखाई नहीं देती, बल्कि पेड़-पौधों, फूल-पत्तों, नदी-झरनों में भी उसी प्रभु की मूरत दिखाई देती है।

व्यक्ति को हृदय के द्वार खोलना सीखना है। हृदय के द्वार खुल जाना ही आनंदमय जीवन जीने का आधार है। द्वार खुला है सबके लिए, जहाँ सिर्फ लुटाना ही लुटाना है। बस यही जीवन है।

सांगली-महा.। 'सकारात्मक विचारों के द्वारा मन की शांति' कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, महानगरपालिका सभापति बसवेश्वर सातपुते, आई.ए.एस. अधिकारी नाना साहेब पाटील, उद्योजक गिरीश चितळे, ब्र.कु. सुनिता, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

सिहोरा-म.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् जेल अधीक्षक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कृष्णा।

जबलपुर-जय भीम नगर(म.प्र.)। मासिक व्याख्यान माला 'एक कदम दिव्यता की ओर' कार्यक्रम में अपनी शुभकामनायें देते हुए शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एस. श्रीवास्तव। साथ हैं डॉ. के. कुमार, ब्र.कु. बाला तथा सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. आरती।

चिकित्सकों की गरिमा में अंतर, सुधार की ज़रूरत

'तनाव मुक्त' कार्यक्रम में डॉक्टर्स से रूबरू हुई जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा शिवानी

ग्वालियर-म.प्र.। डॉक्टर्स को तन के इलाज के साथ-साथ मन का इलाज करना भी आवश्यक है। यह तभी हो सकेगा जब मन सशक्त होगा। मन को सशक्त बनाने के लिए वाणी के संयम की ज़रूरत है। हमें सकारात्मक ऊर्जा देना सीखना होगा। समय के साथ चिकित्सकों की गरिमा में अंतर आया है। इसे पुन: सुधारने की ज़रूरत है। डॉक्टर, मरीज और बीमारी एक होते हुए भी असर अलग-अलग होता है, क्योंकि विश्वास में कमी आई है।

उक्त विचार जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु.शिवानी ने भगवत सहाय सभागार में आयोजित दो दिवसीय 'तनाव मुक्त' कार्यक्रम में चिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आंतरिक ऊर्जा के आभामंडल को बढ़ाने से हम अपने व्यवहार व व्यवसाय को अच्छा बना सकते हैं। मरीज दर्द की स्थिति में ही आपके पास आता है, ऐसे में आपका नम्र भाव उनकी आधी बीमारी खत्म कर देता है। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर आई.एम.ए. अध्यक्ष डॉ. दिनेश उदैनिया एवं सचिव अमित दीवान ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि हमारे भाग्य के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य जुड़े हुए हैं। हमारे द्वारा धन और मन का जो व्यवहार किया जाता है, यदि उसको आप अभी नहीं निपटाओगे तो यह अगले जन्म में आपके लिए कष्टकारी होगा। पिछले जन्मों के कर्मों को नहीं जानने के कारण ही हम दु:खी हैं। जैसा बीज, वैसा फल, जो हमने बोया है वही हमें मिलता है। इस सिरीज़ को बंद करने के लिए किसी पक्ष को पहल तो करनी ही होगी। हमारे वर्तमान कर्म ही भविष्य का निर्माण करेंगे।

बढ़ते तनाव से बढ़ रही दुर्घटनायें

कार्यक्रम के दौरान कैंडल लाइटिंग कर पीड़ितों को सम्बल प्रदान करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, केन्द्रीय नीति आयोग की सदस्या शताब्दी पाण्डे, मुख्य वन संरक्षक जगदीश प्रसाद, ब्र.कु. नीलम तथा ब्र.कु. सौम्या।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा सड़क दुर्घटना में पीड़ित लोगों की याद में विश्व यादगार दिवस पर 'आध्यात्मिकता से सुरक्षा' विषयक कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी ने कहा कि ज़्यादातर दुर्घटनाएं वाहन चालक की लापरवाही से होती हैं। सजगता के अभाव में दुर्घटनाओं पर काबू पाना सम्भव नहीं है। इसके साथ ही तनाव और तेज़ गति से वाहन चलाने से भी दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। उन्होंने सर्वे भवन्तु सुखीन: का उल्लेख करते हुए कहा कि गाड़ी चलाते वक्त दूसरों को अपने समान मानकर उनकी सुविधा का ध्यान रखें। उन्होंने आगे कहा कि वाहन चालक का यदि अपने मन पर नियंत्रण नहीं, तो उसका गाड़ी पर नियंत्रण होना सम्भव नहीं है। इसलिए वाहन चालकों को योग की शिक्षा देना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने बताया कि मुम्बई में शासकीय परिवहन चालकों और कण्डकटरों कों नियमित रूप से राजयोग का प्रशिक्षण दिये जाने पर दुर्घटनाओं में कमी आई है। केन्द्रीय नीति आयोग की सदस्या शताब्दी पाण्डे ने कहा कि नैतिक और चारित्रिक शिक्षा का अभाव ही दुर्घटनाओं को जन्म दे रहा है। उन्होंने सभी माताओं से अपील की कि वे अपने बच्चों को यातायात नियमों को पालन करने और गाड़ी धीरे चलाने के लिए प्रेरित करें। मुख्य वन संरक्षक जगदीश प्रसाद ने कहा कि आध्यात्मिकता से हमें सुरक्षित यात्रा करने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि गाड़ियों की क्षतिपूर्ति इन्श्योरेन्स द्वारा हो जाती है, लेकिन शारीरिक भरपाई नहीं की जा सकती। इसलिए उन्होंने राजयोग मेडिटेशन द्वारा मन की एकाग्रता को बढ़ाने की अपील की। ब्र.कु. नीलम ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. सौम्या ने किया। अन्त में मौन रहकर पीड़ितों को आत्म सम्बल प्रदान करने के लिए मेडिटेशन किया गया।

कार्यक्रम में पीड़ितों को आत्म सम्बल प्रदान करने के लिए मेडिटेशन किया गया।

अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान

पटना-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के ग्रामीण प्रभाग द्वारा श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. राजू भाई ने कहा कि किसानों के जीवन में आध्यात्मिकता के द्वारा श्रेष्ठ मानसिक बदलाव लाकर 2007 में 'शाश्वत यौगिक खेती' नाम से प्रोजेक्ट चलाया गया। जिसके सकारात्मक परिणाम जैविक व शाश्वत यौगिक खेती में पाये गये। जिसे देख भारत के विभिन्न प्रान्तों में किसान सशक्तिकरण अभियान निकाले गये। किसानों के जीवन को निर्व्यसन व चरित्रवान बनाने की दिशा में जागरुकता के कार्यक्रम आयोजित किये गये। इसी के अंतर्गत यहाँ भी इस कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी,गुज. ने कहा कि आध्यात्मिकता के द्वारा वैचारिक क्रान्ति लाकर अर्थात् किसान की सोच बदलकर उनकी दशा बदलनी है। उनकी नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के प्रयास इस अभियान के द्वारा किए जाएंगे।

बिहार के कृषि मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने कहा कि इस अभियान का लक्ष्य बहुत ही प्रशंसनीय है। मुझे बहुत खुशी है कि ब्रह्माकुमारी संस्था ने कृषि के क्षेत्र में सशक्तिकरण के लिए कदम उठाए हैं जो बहुत ही सराहनीय है। सरकार के द्वारा जैविक खेती के साथ ही हम शाश्वत यौगिक खेती पद्धति को बिहार में प्रयोग करेंगे। इसके लिए सर्वप्रथम हमारे आवास में ही जो खेती के लिए भूमि है, उसमें यौगिक खेती का प्रयोग करने के लिए मैं संस्था को आमंत्रित करता हूँ।

राम कृष्ण पाल यादव, केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार ने बताया कि सरकार दृढ़संकल्प है कि 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी हो जाये। इसके लिए सरकार के कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। परन्तु इस संदर्भ में ब्रह्माकुमारी संस्था के द्वारा समाजिक एवं मानवीय उत्थान हेतु कृषि अभियान जो बिहार में निकाली जा रही है, वो निश्चित हीं अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी व सरकार की सफलता में सहयोग मिलेगा।

ब्र.कु. संगीता,क्षेत्रिय निदेशिका ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी का स्वागत एवं आभार व्यक्त किए। साथ ही अभियान यात्रियों को रामकृष्णपाल यादव के द्वारा ध्वज एवं ब्र.कु सरला दीदी के द्वारा कलष देकर अभियान का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर संस्था के सैकड़ों भाई-बहनें एवं हज़ारों की संख्या में किसान उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलित कर अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. राजेन्द्र, प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू भाई, कृषि मंत्री डॉ. प्रेम कुमार, प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. सरला व ब्र.कु. संगीता।

शिक्षाविदों के लिए कार्यशाला का आयोजन

ओ.आर.सी.गुरूग्राम। स्कूल, कॉलेज एवं विश्व-विद्यालयों के शिक्षकों, प्राचार्यों एवं प्रशासकों के लिए 'गेनिंग इन्साइट्स गोइंग बियॉन्ड' विषय पर स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ज़िम्मेवार हम सभी हैं। हमारा मन जितना सकारात्मक एवं अहिंसक विचारों से पूर्ण होगा, उतना ही वातावरण शक्तिशाली होगा। शिक्षकों को पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को भावनात्मक रूप से भी शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता है। एक शक्तिशाली मन ही परिस्थितियों का सामना कर सकता है। हमें स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। हम अपने बारे में बेहतर जानते हैं। हम सिर्फ बच्चों को किताबी शिक्षा ही नहीं सिखाते, बल्कि अपने आचरण से भी बहुत कुछ सिखाते हैं। ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र. कु. आशा दीदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि अगर हम विद्यार्थियों का श्रेष्ठ जीवन बनाना चाहते हैं तो सबसे पहले हमारा जीवन उनके सामने श्रेष्ठता का उदाहरण होना चाहिए। उन्होंने ऐसे आयोजनों को शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए आवश्यक बताया। ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि जीवन की असली खुशी दूसरों को देने में है। जीवन का मुख्य लक्ष्य ही दूसरों की सेवा करना है। ब्र.कु. रमा ने सभी को संस्था का परिचय देते हुए कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट किया।

शिक्षाविदों को सम्बोधित करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा व जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी।

जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने बताया कि बच्चों के जीवन को एक सही दिशा प्रदान करने में शिक्षकों की एक बहुत बड़ी भूमिका है। बच्चों को हम जिस प्रकार का वातावरण देते हैं, उनमें उस प्रकार के ही विचार पैदा होते हैं। उन्होंने कहा कि आज अगर युवाओं में हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ रही है तो उसके

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 11th Dec 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं आशीर्वाद प्रेस द्वारा मुद्रित।